न्यायियों

यहूदा के लोग कनानियों से युद्ध करते हैं

1 यहोशू मर गया। तब इस्राएल के लोगों ने यहोवा से
प्रार्थना की। उन्होंने कहा, "हमारे परिवार समूह में
से कौन प्रथम जाने वाला तथा कनानी लोगों से हम
लोगों के लिये युद्ध करने वाला होगा?"

2 यहोवा ने इस्राएली लोगों से कहा, "यहूदा का परिवार
समूह जाएगा। मैं उनको इस प्रदेश को प्राप्त करने
दूँगा।"

3 यहूदा के लोगों ने शिमोन परिवार समूह के अपने
भाइयों से सहायता मांगी। यहूदा के लोगों ने कहा, "भाइयों,
यहोवा ने हम सभी को कुछ प्रदेश देने का वचन दिया
है। यदि तुम लोग हम लोगों के प्रदेश के लिए युद्ध करने
में हमारे साथ आओगे और सहायता करोगे तो हम लोग
तुम्हारे प्रदेश के लिये तुम्हारे साथ जायेंगे और युद्ध
करेंगे।" शिमोन के लोग यहूदा के अपने भाइयों के युद्ध
में सहायता करने को तैयार हो गए।

4 यहोवा ने यहूदा के लोगों को कनानियों और परिज्जी
लोगों को हराने में सहायता की। यहूदा के लोगों ने
बेजेक नगर में दस हजार व्यक्तियों को मार डाला।
5 बेजेक नगर में यहूदा के लोगों ने अदोनीबेजेक के
शासक को पाया* और उससे युद्ध किया। यहूदा के
लोगों ने कनानियों और परिज्जी लोगों को हराया।

6 अदोनीबेजेक के शासक ने भाग निकलने का प्रयत्न
किया। किन्तु यहूदा के लोगों ने उसका पीछा किया
और उसे पकड़ लिया। जब उन्होंने उसे पकड़ा तब
उन्होंने उसके हाथ और पैर के अंगूठों को काट डाला।
7 तब अदोनीबेजेक के शासक ने कहा, "मैंने सत्तर
राजाओं के हाथ और पैर के अंगूठे काटे और उन
राजाओं को वही भोजन करना पड़ा जो मेरी मेज से
टुकड़ों में गिरा। अब यहोवा ने मुझे उसका बदला दिया
है जो मैंने उन राजाओं के साथ किया था।" यहूदा के
लोग बेजेक के शासक को यरूशलेम ले गए और वह
वहीं मरा। 8 यहूदा के लोग यरूशलेम के विरुद्ध लड़े
और उस पर अधिकार कर लिया। यहूदा के लोगों ने
यरूशलेम के लोगों को मारने के लिये तलवार का
उपयोग किया। उन्होंने नगर को जला दिया। 9 उसके
बाद यहूदा के लोग कुछ अन्य कनानी लोगों से युद्ध
करने के लिए गए। वे कनानी पहाड़ी प्रदेशों, नेगेव और
समुद्र के किनारे की पहाड़ियों में रहते थे।

10 तब यहूदा के लोग उन कनानी लोगों के विरुद्ध
लड़ने गए जो हेब्रोन नगर में रहते थे। (हेब्रोन को
किर्यतर्बा कहा जाता था।) यहूदा के लोगों ने शेशै,
अहीमन और तल्मै कहे जाने वाले लोगों को हराया।

कालेब और उसकी पुत्री

11 यहूदा के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा। वे दबीर
नगर, वहाँ के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने गए। (दबीर
को किर्यत्सेपेर कहा जाता था।) 12 यहूदा के लोगों द्वारा
युद्ध आरम्भ करने के पहले कालेब ने लोगों से एक
प्रतिज्ञा की। कालेब ने कहा, "मैं अपनी पुत्री अकसा
को उस व्यक्ति को पत्नी के रूप में दूँगा जो किर्यत्सेपेर
नगर पर आक्रमण करता है और उस पर अधिकार
करता है।"

13 कालेब का एक छोटा भाई था जिसका नाम कनज
था। कनज का एक पुत्र ओत्नीएल नाम का था।
(ओत्नीएल कालेब का भतीजा था।) ओत्नीएल ने
किर्यत्सेपेर नगर को जीत लिया। इसलिए कालेब ने
अपनी पुत्री अकसा को पत्नी के रूप में ओत्नीएल को
दिया।

14 जब अकसा ओत्नीएल के पास आई तब ओत्नीएल
ने उससे कहा* कि वह अपने पिता से कुछ भूमि मांगे।
अकसा अपने पिता के पास गई। अत: वह अपने गधे से
उतरी और कालेब ने पूछा, "क्या कठिनाई है?"

15 अकसा ने कालेब को उत्तर दिया, "आप मुझे
आशीर्वाद दें।* आपने मुझे नेगेव की सूखी मरुभूमि दी
है। कृपया मुझे कुछ पानी के सोते वाली भूमि दें।" अत:
कालेब ने उसे वह दिया जो वह चाहती थी। उसने उसे
उस भूमि के ऊपर और नीचे के पानी के सोते दे दिये।

16 केनी लोगों ने ताड़वृक्षों के नगर (यरीहो) को छोड़ा
और यहूदा के लोगों के साथ गए। वे लोग यहूदा की

अदोनीबेजेक के शासक को पाया इसे व्यक्ति का नाम भी समझा जा सकता है।

ओत्नीएल ... कहा या "अकसा ने ओत्नीएल से कहा।"

आप ... आशीर्वाद दें या "कृपया मेरा सत्कार करें" या "मुझे जल की एक धारा दें।"

मरुभूमि में वहाँ के लोगों के साथ रहने गए। यह नेगेव में अराद नगर के पास था। (केनी लोग मूसा के ससुर के परिवार से थे।)

17कुछ कनानी लोग सपत नगर में भी रहते थे। इसलिए यहूदा के लोग और शिमोन के परिवार समूह के लोगों ने उन कनानी लोगों पर आक्रमण किया। उन्होंने नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया। इसलिये उन्होंने नगर का नाम होर्मा रखा।

18यहूदा के लोगों ने अज्जा के नगर और उसके चारों ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया। यहूदा के लोगों ने अशकलोन और एक्रोन नगरों और उनके चारों ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया।

19यहोवा उस समय यहूदा के लोगों के साथ था, जब वे युद्ध कर रहे थे। उन्होंने पहाड़ी प्रदेश की भूमि पर अधिकार किया। किन्तु यहूदा के लोग घाटियों की भूमि लेने में असफल रहे क्योंकि वहाँ के निवासियों के पास लोहे के रथ थे।

20मूसा ने कालेब को हेब्रोन के पास की भूमि देने का वचन दिया था। अत: वह भूमि कालेब के परिवार समूह को दी गई। कालेब के लोगों ने अनाक के तीन पुत्रों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।

बिन्यामीन लोग यरूशलेम में बसते हैं।

21बिन्यामीन परिवार के लोग यबूसी लोगों को यरूशलेम छोड़ने के लिये विवश न कर सके। उस समय से लेकर अब तक यबूसी लोग यरूशलेम में बिन्यामीन लोगों के साथ रहते आए हैं।

यूसुफ के लोग बेतेल पर अधिकार जमाते हैं

22-23यूसुफ के परिवार समूह के लोग भी बेतेल नगर के विरुद्ध लड़ने गए। (बेतेल, लूज कहा जाता था।) यहोवा यूसुफ के परिवार समूह के लोगों के साथ था। यूसुफ के परिवार के लोगों ने कुछ जासूसों को बेतेल नगर को भेजा। (इन व्यक्तियों ने बेतेल नगर को हराने के उपाय का पता लगाया।) 24जब वे जासूस बेतेल नगर को देख रहे थे तब उन्होंने एक व्यक्ति को नगर से बाहर आते देखा। जासूसों ने उस व्यक्ति से कहा, "हम लोगों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताओ। हम लोग नगर पर आक्रमण करेंगे। किन्तु यदि तुम हमारी सहायता करोगे तो हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचायेंगे।"

25उस व्यक्ति ने जासूसों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताया। यूसुफ के लोगों ने बेतेल के लोगों को मारने के लिये अपनी तलवार का उपयोग किया। किन्तु उन्होंने उस व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचाई जिसने उन्हें सहायता दी थी और उन्होंने उसके परिवार के लोगों को चोट नहीं पहुँचाई। उस व्यक्ति और उसके परिवार को स्वतन्त्र जाने दिया गया। 26वह व्यक्ति उस प्रदेश में गया जहाँ हित्ती लोग रहते थे और वहाँ उसने एक नगर बसाया। उसने उस नगर का नाम लूज रखा और वह आज भी वहाँ है।

अन्य परिवार समूह कनानियों से युद्ध करते हैं

27 कनानी लोग बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम, मगिद्दो और उनके चारों ओर के छोटे नगरों में रहते थे। मनश्शे के परिवार समूह के लोग उन लोगों को उन नगरों को छोड़ने के लिये विवश नहीं कर सके थे। इसलिए कनानी लोग वहाँ टिके रहे। उन्होंने अपना घर छोड़ने से इन्कार कर दिया। 28बाद में इस्राएल के लोग अधिक शक्तिशाली हुए और कनानी लोगों को दासों की तरह अपने लिए काम करने के लिये विवश किया। किन्तु इस्राएल के लोग सभी कनानी लोगों से उनका प्रदेश न छुड़वा सके। 29यही बात एप्रैम के परिवार समूह के साथ हुई। कनानी लोग गेजेर में रहते थे और एप्रैम के लोग सभी कनानी लोगों से उनका देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग एप्रैम के लोगों के साथ गेजेर में रहते चले आए।

30जबूलून के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। कित्रोन और नहलोल नगरों मे कुछ कनानी लोग रहते थे। जबूलून के लोग उन लोगों से उनका देश न छुड़वा सके। वे कनानी लोग टिके रहे और जबूलून लोगों के साथ रहते चले आए। किन्तु जबूलून के लोगों ने उन लोगों को दासों की तरह काम करने को विवश किया।

31आशेर के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। आशेर के लोग उन लोगों से अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेलबा, अपीक और रहोब नगरों को न छुड़वा सके। 32आशेर के लोग कनानी लोगों से अपना देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग आशेर के लोगों के साथ रहते चले आए।

33नप्ताली के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। नप्ताली परिवार के लोग उन लोगों से बेतशेमेश और बेतनात नगरों को न छुड़वा सके। इसलिए नप्ताली के लोग उन नगरों में उन लोगों के साथ रहते चले आए। वे कनानी लोग नप्ताली लोगों के लिए दासों की तरह काम करते रहे।

34एमोरी लोगो ने दान के परिवार समूह के लोगों को पहाड़ी प्रदेश में रहने के लिये विवश कर दिया। दान के लोगों को पहाड़ियों में ठहरना पड़ा क्योंकि एमोरी लोग उन्हें घाटियों में उतर कर नहीं रहने देते थे। 35एमोरी लोगों ने हेरेस पर्वत, अय्यलोन तथा शालबीम में ठहरने का निश्चय किया। बाद में, यूसुफ का परिवार समूह शक्तिशाली हो गया। तब उन्होंने एमोरी लोगों से दासों की तरह काम लिया। 36एमोरी लोगों का प्रदेश बिच्छू दर्रे से सेला और सेला के परे पहाड़ी प्रदेश तक था।

बोकीम में यहोवा का दूत

2 यहोवा का दूत गिलगाल नगर से बोकीम नगर को
गया। दूत ने यहोवा का एक सन्देश इस्राएल के
लोगों को दिया। सन्देश यह था: "तुम मिस्र में दास थे।
किन्तु मैंने तुम्हें स्वतन्त्र किया और मैं तुम्हें मिस्र से
बाहर लाया। मैं तुम्हें इस प्रदेश में लाया जिसे तुम्हारे
पूर्वजों को देने के लिये मैंने प्रतिज्ञा की थी। मैंने कहा,
मैं तुमसे अपना वाचा कभी नहीं तोड़ूँगा। 2किन्तु इसके
बदले में तुम्हें इस प्रदेश के निवासियों के साथ समझौता
नहीं करना होगा। तुम्हें इन लोगों की वेदियाँ नष्ट
करनी चाहिए। यह मैंने तुमसे कहा किन्तु तुम लोगों ने
मेरी आज्ञा नहीं मानी। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?
3"अब मैं तुमसे यह कहता हूँ, 'मैं इस प्रदेश से अब
और लोगों को बाहर नहीं हटाऊँगा। ये लोग तुम्हारे
लिये समस्या बनेंगे। वे तुम्हारे लिए बनाया गया जाल
बनेंगे। उनके असत्य देवता तुम्हें फँसाने के लिए जाल
बनेंगे।'"
4स्वर्गदूत इस्राएल के लोगों को यहोवा का सन्देश जब
दे चुका, तब लोग जोर से रो पड़े। 5इसलिए इस्राएल के
लोगों ने उस स्थान को बोकीम नाम दिया जहाँ वे रो पड़े
थे। बोकीम में इस्राएल के लोगों ने यहोवा को भेंट
चढ़ाई।

आज्ञा का उल्लंघन और पराजय

6तब यहोशू ने लोगों से कहा कि वे अपने घर लौट
सकते हैं। इसलिए हर एक परिवार समूह अपनी भूमि
का क्षेत्र लेने गया और उसमें रहे। 7इस्राएल के लोगों ने
तब तक यहोवा की सेवा की जब तक यहोशू जीवित
रहा। उन बुज़ुर्गों (नेताओं) के जीवन काल में भी वे
यहोवा की सेवा करते रहे जो यहोशू के मरने के बाद
भी जीवित रहे। इन वृद्ध लोगों ने इस्राएल के लोगों के
लिए जो यहोवा ने महान कार्य किये थे, उन्हें देखा था।
8नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का सेवक था, एक सौ
दस वर्ष की अवस्था में मरा। 9अत: इस्राएल के लोगों ने
यहोशू को दफनाया। यहोशू को भूमि के उस क्षेत्र में
दफनाया गया जो उसे दिया गया था। वह भूमि तिम्नथेरेस
में थी जो हेरेस के पहाड़ी क्षेत्र में गाश पर्वत के उत्तर में
था।
10इसके बाद वह पूरी पीढ़ी मर गई तथा नयी पीढ़ी
उत्पन्न हुई। यह नयी पीढ़ी यहोवा के विषय में न तो
जानती थी और न ही उसे, यहोवा ने इस्राएल के लोगों
के लिये क्या किया था, इसका ज्ञान था। 11इसलिये
इस्राएल के लोगों ने पाप किये और बाल की मूर्तियों की
सेवा की। यहोवा ने मनुष्यों को यह पाप करते देखा।
12यहोवा इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाया था
और इन लोगों के पूर्वजों ने यहोवा की उपासना की
थी। किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ दिया। इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के
असत्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ की, जो उनके
चारों ओर रहते थे। इस काम ने यहोवा को क्रोधित
कर दिया। 13इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ दिया और बाल एवं अश्तोरेत की पूजा
करने लगे।
14यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।
इसलिए यहोवा ने शत्रुओं को इस्राएल के लोगों पर
आक्रमण करने दिया और उनकी सम्पत्ति लेने दी।
उनके चारों ओर रहने वाले शत्रुओं को यहोवा ने उन्हें
पराजित करने दिया। इस्राएल के लोग अपनी रक्षा अपने
शत्रुओं से नहीं कर सके। 15जब इस्राएल के लोग युद्ध
के लिये निकले तो वे पराजित हुए। वे पराजित हुए
क्योंकि यहोवा उनके साथ नहीं था। यहोवा ने पहले से
इस्राएल के लोगों को चेतावनी दी थी कि वे पराजित
होंगे, यदि वे उन लोगों के देवताओं की सेवा करेंगे जो
उनके चारों ओर रहते हैं। इस्राएल के लोगों की बहुत
अधिक हानि हुई।

16तब यहोवा ने न्यायाधीश कहे जाने वाले प्रमुखों को
चुना। इन प्रमुखों ने इस्राएल के लोगों को उन शत्रुओं से
बचाया जिन्होंने इनकी सम्पत्ति ले ली थी। 17किन्तु इस्राएल
के लोगों ने अपने न्यायाधीशों की एक न सुनी। इस्राएल
के लोग यहोवा के प्रति वफादार नहीं थे, वे अन्य
देवताओं का अनुसरण कर रहे थे।* अतीतकाल में
इस्राएल के लोगों के पूर्वज यहोवा के आदेशों का पालन
करते थे किन्तु अब इस्राएल के लोग बदल गये थे और
वे यहोवा की आज्ञा का पालन करना छोड़ चुके थे।
18इस्राएल के शत्रुओं ने कई बार लोगों के साथ बुरा
किया। इसलिए इस्राएल के लोग सहायता के लिये चिल्लाते
थे और हर बार यहोवा को लोगों के लिए दु:ख होता
था। हर बार वह शत्रुओं से लोगों की रक्षा के लिये एक
न्यायाधीश भेजता था। इस प्रकार हर बार इस्राएल के
लोग अपने शत्रुओं से बच जाते थे। 19किन्तु जब हर
एक न्यायाधीश मर गया, तब इस्राएल के लोगों ने फिर
पाप किया और असत्य देवताओं की पूजा आरम्भ की।
इस्राएल के लोग बहुत हठी थे, उन्होंने अपने पाप के
व्यवहार को बदलने से इन्कार कर दिया।
20इस प्रकार यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित
हुआ और उसने कहा, "इस राष्ट्र ने उस वाचा को तोड़ा
है जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। उन्होंने मेरी
नहीं सुनी । 21इसलिए मैं और अधिक राष्ट्रों को पराजित
नहीं करूँगा, और न ही इस्राएल के लोगों का रास्ता
साफ करुँगा। वे राष्ट्र उन दिनों भी उस प्रदेश में थे जब
यहोशू मरा था और मैं उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने

यहोवा के ... रहे थे "दूसरे देवताओं के वेश्या की तरह व्यवहार
कर रहे थे।"

दूँगा। 22मैं उन राष्ट्रों का उपयोग इस्राएल के लोगों की
परीक्षा के लिये करूँगा। मैं यह देखूँगा कि इस्राएल के
लोग अपने यहोवा का आदेश वैसे ही मानते हैं अथवा
नहीं जैसे उनके पूर्वज मानते थे।" 23बीते समय में,
यहोवा ने उन राष्ट्रों को उन प्रदेशों में रहने दिया था।
यहोवा ने शीघ्रता से उन राष्ट्रों को अपना देश छोड़ने
नहीं दिया। उसने उन्हें हराने में यहोशू की सेना की
सहायता नहीं की।

3 यहाँ उन राष्ट्रों के नाम हैं जिन्हें यहोवा ने बलपूर्वक
अपना देश नहीं छुड़वाया। यहोवा इस्राएल के उन
लोगों की परीक्षा लेना चाहता था, जो कनान प्रदेश को
लेने के लिये होने वाले युद्धों में लड़े नहीं थे। यही कारण
था कि उसने उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने दिया।
2(उस प्रदेश में यहोवा द्वारा उन राष्ट्रों को रहने देने का
कारण केवल यह था कि इस्राएल के लोगों के उन
वंशजों को शिक्षा दी जाय जो उन युद्धों में नहीं लड़े थे।)
3पलिश्ती लोगों के पाँच शासक, सभी कनानी लोग,
सीदोन के लोग और हिव्वी लोग जो लबानोन के पहाड़ों
में बालहेर्मोन पर्वत से लेकर हमात तक रहते थे। 4यहोवा
ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये
उस प्रदेश में रहने दिया। वह यह देखना चाहता था कि
इस्राएल के लोग यहोवा के उन आदेशों का पालन
करेंगे अथवा नहीं, जिन्हें उसने मूसा द्वारा उनके पूर्वजों
को दिया था।

5इस्राएल के लोग कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी
और यबूसी लोगों के साथ रहते थे। 6इस्राएल के लोगों ने
उन लोगों की पुत्रियों के साथ विवाह करना आरम्भ
कर दिया। इस्राएल के लोगों ने अपनी पुत्रियों को उन
लोगों के पुत्रों के साथ विवाह करने दिया और इस्राएल
के लोगों ने उन लोगों के देवताओं की सेवा की।

पहला न्यायाधीश ओत्नीएल

7यहोवा ने देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं।
इस्राएल के लोग यहोवा अपने परमेश्वर को भूल गए
और बाल की मूर्तियों एवं अशेरा की मूर्तियों की सेवा
करने लगे। 8यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित
हुआ।यहोवा ने कुशन रिश्आतइम को जो मेसोपोटामिया
का राजा था, इस्राएल के लोगों को हराने और उन पर
शासन करने दिया। इस्राएल के लोग उस राजा के
शासन में आठ वर्ष तक रहे। 9किन्तु इस्राएल के लोगों
ने यहोवा को रोकर पुकारा। यहोवा ने एक व्यक्ति को
उनकी रक्षा के लिए भेजा। उस व्यक्ति का नाम ओत्नीएल
था। वह कनजी का पुत्र था । कनजी कालेब का छोटा
भाई था। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों को बचाया।
10यहोवा की आत्मा ओत्नीएल पर उतरी और वह
इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश हो गया। ओत्नीएल ने
इस्राएल के लोगों का युद्ध में संचालन किया। यहोवा ने
मेसोपोटामिया के राजा कूशत्रिशातैम को हराने में
ओत्नीएल की सहायता की। 11इस प्रकार वह प्रदेश
चालीस वर्ष तक शान्त रहा, जब तक कनजी नामक
व्यक्ति का पुत्र ओत्नीएल नहीं मरा।

न्यायाधीश एहूद

12यहोवा ने फिर इस्राएल के लोगों को पाप करते
देखा। इसलिए यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को
इस्राएल के लोगों को हराने की शक्ति दी। 13एग्लोन ने
इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करते समय अम्मोनियों
और अमालेकियों को अपने साथ लिया। एग्लोन और
उसकी सेना ने इस्राएल के लोगों को हराया और ताड़
के पेंड़ो वाले नगर (यरीहो) से उन्हें निकाल बाहर
किया। 14इस्राएल के लोग अट्ठारह वर्ष तक मोआब
के राजा एग्लोन के शासन में रहे।

15तब लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की और रोकर उसे
पुकारा। यहोवा ने इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिए
एक व्यक्ति को भेजा। उस व्यक्ति का नाम एहूद था।
एहूद वामहस्त व्यक्ति था। एहूद बिन्यामीन के परिवार
समूह के गेरा नामक व्यक्ति का पुत्र था। इस्राएल के
लोगों ने एहूद को मोआब के राजा एग्लोन के लिये कर
के रूप में कुछ धन देने को भेजा। 16एहूद ने अपने
लिये एक तलवार बनाई। वह तलवार दोधारी थी और
लगभग अट्ठारह इंच लम्बी थी। एहूद ने तलवार को
अपनी दायीं जांघ से बांधा और अपने वस्त्रों में छिपा
लिया।

17इस प्रकार एहूद मोआब के राजा एग्लोन के पास
आया और उसे भेंट के रूप में धन दिया। (एग्लोन बहुत
मोटा आदमी था।) 18एग्लोन को धन देने के बाद एहूद
ने उन व्यक्तियों को घर भेज दिया, जो धन लाए थे।
19जब एग्लोन गिलगाल नगर की मूर्तियों के पास से
वापस मुड़ा, तब एहूद ने एग्लोन से कहा, "राजा, मैं
आपके लिए एक गुप्त सन्देश लाया हूँ।" राजा ने कहा,
"चुप रहो।" तब उसने सभी नौकरों को कमरे से बाहर
भेज दिया। 20एहूद राजा एग्लोन के पास गया। एग्लोन
एकदम अकेला अपने ग्रीष्म महल के ऊपरी कमरे में
बैठा था। तब एहूद ने कहा, "मैं परमेश्वर के यहाँ से
आपके लिये सन्देश लाया हूँ।" राजा अपने सिंहासन से
उठा, वह एहूद के बहुत पास था। 21ज्योंही राजा अपने
सिंहासन से उठा,* एहूद ने अपने बांये हाथ को बढ़ाया
और उस तलवार को निकाला जो उसकी दायीं जांघ में
बंधी थी। तब एहूद ने तलवार को राजा के पेट में घुसेड़
दिया। 22तलवार एग्लोन के पेट में इतनी भीतर गई कि
उसकी मूठ भी उसमें समा गई। राजा की चर्बी ने पूरी

ज्योंही राजा ... उठा पाठ का यह अंश प्राचीन यूनानी अनुवाद में है, किन्तु यह संयोगवश हिब्रू पाठ से छूट गया था।

तलवार को छिपा लिया। इसलिए एहूद ने तलवार को एग्लोन के अन्दर छोड़ दिया। 23एहूद कमरे से बाहर गया और उसने अपने पीछे दरवाजों को ताला लगाकर बन्द कर दिया।

24एहूद के चले जाने के ठीक बाद नौकर आए। नौकरों ने कमरे के दरवाजों में ताला लगा पाया। इसलिए नौकरों ने कहा, "राजा आराम कक्ष में आराम कर रहे होंगे।" 25इसलिए नौकरों ने लम्बे समय तक प्रतीक्षा की। अन्त में वे चिन्तित हुए। उन्होंने चाभी ली और दरवाजें खोले। जब नौकर घुसे तो उन्होंने राजा को फर्श पर मरा पड़ा देखा। 26जब तक नौकर राजा की प्रतीक्षा करते रहे तब तक एहूद को भाग निकलने का समय मिल गया। एहूद मूर्तियों के पास से होकर सेइरे नामक स्थान की ओर गया। 27एहूद सेइरे नामक स्थान पर पहुँचा। तब उसने एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र मे तुरही बजाई। इस्राएल के लोगों ने तुरही की आवाज सुनी और वे पहाड़ियों से उतरे। एहूद उनका संचालक था। 28एहूद ने इस्राएल के लोगों से कहा, "मेरे पीछे चलो। यहोवा ने मोआब के लोगों अर्थात् हमारे शत्रुओं को हराने में हमारी सहायता की है।"

इसलिए इस्राएल के लोगों ने एहूद का अनुसरण किया। वे एहूद का अनुसरण उन स्थानों पर अधिकार करने के लिए करते रहे जहाँ से यरदन नदी सरलता से पार की जा सकती थी। वे स्थान मोआब के प्रदेश तक पहुँचाते थे। इस्राएल के लोगों ने किसी को यरदन नदी के पार नहीं जाने दिया। 29इस्राएल के लोगों ने मोआब के लगभग दस हजार बलवान और साहसी व्यक्तियों को मार डाला। एक भी मोआबी भागकर बच न सका। 30इसलिए उस दिन मोआब के लोग बलपूर्वक इस्राएल के लोगों के शासन में रहने को विवश किये गए और वहाँ उस प्रदेश में अस्सी वर्ष तक शान्ति रही!

न्यायाधीश शमगर

31एहूद द्वारा इस्राएल के लोगों की रक्षा हो जाने के बाद एक अन्य व्यक्ति ने इस्राएल को बचाया। उस व्यक्ति का नाम शमगर था और वह अनात नामक व्यक्ति का पुत्र था। शमगर ने चाबुक का उपयोग छः सौ पलिश्ती व्यक्तियों को मार डालने के लिये किया।

स्त्री न्यायाधीश दबोरा

4 एहूद के मरने के बाद यहोवा ने इस्राएली लोगों को फिर पाप करते देखा। 2इसलिए यहोवा ने कनान प्रदेश के राजा याबीन को इस्राएली लोगों को पराजित करने दिया। याबीन हासोर नामक नगर में शासन करता था। राजा याबीन की सेना का सेनापति सीसरा नामक व्यक्ति था। सीसरा हरोशेत हाग्गोयीम नामक नगर में रहता था। 3सीसरा के पास नौ सौ लोहे के रथ थे और वह बीस वर्ष तक इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत क्रूर रहा। इस्राएल के लोगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। इसलिए उन्होंने यहोवा की प्रार्थना की और सहायता के लिए रोकर पुकार की।

4एक स्त्री नबी दबोरा नाम की थी। वह लप्पीदोत नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह उस समय इस्राएल की न्यायाधीश थी। 5एक दिन दबोरा, ताड़ के पेड़ के नीचे बैठी थी जिसे "दबोरा का ताड़ वृक्ष" कहा जाता था। इस्राएल के लोग उसके पास यह पूछने के लिये आए कि सीसरा के विषय में क्या किया जाय। दबोरा का ताड़ वृक्ष एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेतेल नगरों के बीच था। 6दबोरा ने बाराक नामक व्यक्ति के पास संदेश भेजा। उसने उसे उस से मिलने को कहा। बाराक अबीनोअम नामक व्यक्ति का पुत्र था। बाराक नप्ताली के क्षेत्र में केदेश नामक नगर में रहता था। दबोरा ने बाराक से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है, 'जाओ और नप्ताली एवं जबूलून के परिवार समूहों से दस हजार व्यक्तियों को इकट्ठा करो। 7मैं याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को तुम्हारे पास भेजूँगा। मैं सीसरा, उसके रथों और उसकी सेना को कीशोन नदी पर पहुँचाऊँगा। मैं वहाँ सीसरा को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।'"

8तब बाराक ने दबोरा से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलोगी तो मैं जाऊँगा और यह करूँगा। किन्तु यदि तुम नहीं चलोगी तो मैं नहीं जाऊँगा।"

9दबोरा ने उत्तर दिया, "निश्चय ही, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। किन्तु तुम्हारी भावना के कारण जब सीसरा हराया जाएगा, तुम्हें सम्मान नहीं मिलेगा। यहोवा एक स्त्री द्वारा सीसरा को हराने देगा।"

इसलिए दबोरा बाराक के साथ केदेश नगर को गई। 10केदेश नगर में बाराक ने जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को एक साथ बुलाया। बाराक ने उन परिवार समूहों से, अपने साथ चलने के लिये दस हजार व्यक्तियों को इकट्ठा किया। दबोरा भी बाराक के साथ गई।

11वहाँ हेबेर नामक एक ऐसा व्यक्ति था जो केनी लोगों में से था। हेबेर अन्य केनी लोगों को छोड़ चुका था। (केनी लोग होबाब के वंशज थे। होबाब मूसा का ससुर था।) हेबेर ने अपना घर सानन्नीम स्थान पर बांज के पेड़ के समीप बनाया था। सानन्नीम केदेश नगर के पास है।

12तब सीसरा से यह कहा गया कि बाराक जो कि अबीनोअम का पुत्र है, ताबोर पर्वत तक पहुँच गया है। 13इसलिए सीसरा ने अपने नौ सौ लोहे के रथों को इकट्ठा किया। सीसरा ने अपने सभी सैनिकों को भी साथ लिया। हरोशेत हाग्गोयीम नगर से उन्होंने कीशोन नदी तक यात्रा की।

14तब दबोरा ने बाराक से कहा, "आज के दिन ही
यहोवा तुम्हें सीसरा को हराने में सहायता देगा। निश्चय
ही, तुम जानते हो कि यहोवा ने पहले से ही तुम्हारे लिये
रास्ता साफ कर रखा है।" इसलिए बाराक ने दस हजार
सैनिकों को ताबोर पर्वत से उतारा। 15बाराक और
उसके सैनिकों ने सीसरा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध
के दौरान यहोवा ने सीसरा, उसकी सेना और रथों को
अस्तव्यस्त कर दिया। उनकी व्यवस्था भंग हो गई।
इसलिए बाराक और उसकी सेना ने सीसरा की सेना
को हरा दिया। किन्तु सीसरा ने अपने रथ को छोड़
दिया तथा पैदल भाग खड़ा हुआ। 16बाराक ने सीसरा
की सेना से युद्ध जारी रखा। बाराक और उसके सैनिकों
ने सीसरा के रथों और सेना का पीछा हरोशेत हाग्गोयीम
तक लगातार किया। बाराक के सैनिकों ने सीसरा के
सैनिकों को मारने के लिये अपनी तलवारों का उपयोग
किया। सीसरा का कोई सैनिक जीवित न बचा।

17किन्तु सीसरा भाग गया। वह उस तम्बू के पास
आया, जहाँ याएल नामक एक स्त्री रहती थी। याएल,
हासोर नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह केनी लोगों में
से एक था। हेबेर का परिवार हासोर के राजा याबीन से
शान्ति–सन्धि किये हुये था। इसलिये सीसरा, याएल के
तम्बू में भाग कर गया। 18याएल ने सीसरा को आते
देखा, अत: वह उससे मिलने बाहर गई। याएल ने सीसरा
से कहा, "मेरे तम्बू मे आओ, मेरे स्वामी, आओ। डरो
नहीं।" इसलिए सीसरा याएल के तम्बू में गया और
उसने उसे एक कालीन से ढक दिया।

19सीसरा ने याएल से कहा, "मैं प्यासा हूँ। कृपया मुझे
पीने को थोड़ा पानी दो।" इसलिए याएल ने एक मशक
खोला, जिसमें उसने दूध रखा था और उसने पीने को
दिया। तब उसने सीसरा को ढक दिया।

20 तब सीसरा ने याएल से कहा, "तम्बू के द्वार पर
जाओ। यदि कोई यहाँ से गुजरता है और पूछता है, 'क्या
यहाँ कोई है?', तो तुम कहना–'नहीं'" 21किन्तु हेबेर
की पत्नी याएल ने एक तम्बू की खूँटी और हथौड़ा
लिया। याएल चुपचाप सीसरा के पास गई। सीसरा बहुत
थका था अत: वह सो रहा था। याएल ने तम्बू की खूँटी
को सीसरा के सिर की एक ओर रखा और उस पर
हथौड़े से चोट की। तम्बू की खूँटी सीसरा के सिर की
एक ओर से होकर जमीन में धँस गई और इस तरह
सीसरा मर गया। 22ठीक तुरन्त बाद बाराक सीसरा को
खोजता हुआ याएल के तम्बू के पास आया। याएल
बाराक से मिलने बाहर निकली और बोली, "अन्दर
आओ और मैं उस व्यक्ति को दिखाऊँगी जिसे तुम ढूँढ
रहे हो।" इसलिए बाराक याएल के साथ तम्बू में घुसा।
बाराक ने वहाँ सीसरा को जमीन पर मरा पड़ा पाया,
तम्बू की खूँटी उसके सिर की एक ओर से दूसरी ओर
निकली हुई थी।

23उस दिन यहोवा ने कनान के राजा याबीन को
इस्राएल के लोगों की सहायता से हराया। 24इस प्रकार
इस्राएल के लोग क्रमश: अधिक शक्तिशाली होते गए
और उन्होंने कनान के राजा याबीन को हरा दिया।
इस्राएल के लोगों ने कनान के राजा याबीन को अन्तिम
रूप से हराया।

दबोरा का गीत

5 जिस दिन इस्राएल के लोगों ने सीसरा को हरायाउस
दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने इस
गीत को गाया: *

2इस्राएल के लोगों ने अपने को युद्ध के लिये तैयार
किया। * लोग युद्ध में जाने के लिये स्वयं आए! यहोवा
को धन्य कहो!

3राजाओं, सुनो। शासकों, ध्यान दो। मैं गाऊँगी। मैं
स्वयं यहोवा के प्रति गाऊँगी। मैं यहोवा, इस्राएल के
लोगों के परमेश्वर की स्तुति करूँगी।

4हे यहोवा, अतीत में तू सेईर देश से आया। तू एदोम
प्रदेश से चलकर आया, और धरती काँप उठी। गगन ने
वर्षा की। मेघों ने जल गिराया।

5पर्वत काँप उठे यहोवा, सीनै पर्वत के परमेश्वर के
सामने, यहोवा, इस्राएल के लोगों के परमेश्वर के सामने!

6अनात का पुत्र शमगर के समय में याएल के समय
में, मुख्य पथ सूने थे। काफिले * और यात्री गौण पथों
से चलते थे।

7कोई योद्धा नहीं था। इस्राएल में कोई योद्धा नहीं था,
हे दबोरा, जब तक तुम न खड़ी हुई, जब तक तुम
इस्राएल की माँ बन कर न खड़ी हुई।

8परमेश्वर ने नये प्रमुखों को चुना कि वे नगर–द्वार
पर युद्ध करे। * इस्राएल के चालीस हजार सैनिकों में–
कोई ढाल और भाला नहीं पा सका।

9मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के साथ है। ये
सेनापति इस्राएल के लोगों में से स्वयं आए! यहोवा को
धन्य कहो!

10श्वेत गधों पर सवार होने वाले लोगों तुम, जो
कम्बल की काठी पर बैठते हो और तुम जो राजपथ
पर चलते हो, ध्यान दो!

अध्याय 5 यह बहुत प्राचीन गीत है और इस गीत की कई पंक्तियों के अर्थ हिब्रू भाषा में समझ पाना कठिन है।

इस्राएल ... तैयार किया इसका अर्थ यह भी हो सकता है, "जन नायकों ने इस्राएल का नेतृत्व किया" अथवा "जब इस्राएल में लोग लम्बे बाल रखते थे।" या सैनिक अपने बालों को परमेश्वर को विशेष उपहार के रूप में अर्पित करते थे।

काफिले व्यापारियों के दल। प्राय: बहुत से व्यापारी अपने सामान को गधों या ऊँटों पर लादकर एक साथ यात्रा करते थे।

परमेश्वर ... युद्ध करे इन दो पंक्तियों का अर्थ बहुत अस्पष्ट है।

11घुंघरूओं की छमछम पर, पशुओं को लिए पानी
वाले कूपों पर, वे यहोवा की विजय की कथाओं को
कहते हैं, इस्राएल में यहोवा और उसके वीरों की
विजय–कथा कहते हैं। उस समय यहोवा के लोग
नगर–द्वारों पर लड़े और विजयी हुये!
12 दबोरा जागो, जागो! जागो, जागो, गीत गाओ जागो,
बाराक! जाओ, हे अबीनोअम के पुत्र अपने शत्रुओं
को पकड़ो!
13उस समय, बचे लोग, सम्मानितों के पास आए।
यहोवा के लोग, मेरे पास योद्धाओं के साथ आए।*
14एप्रैम के कुछ लोग अमालेक के पहाड़ी प्रदेश* में
बसे। ऐ बिन्यामीन, तुम्हारे बाद वे लोग और तुम्हारे
लोग आए। माकीर के परिवार समूह से सेनापति आगे
आए। काँसे के दण्ड सहित नायक आए जबूलून परिवार
समूह से।
15इस्साकर के नेता दबोरा के साथ थे। इस्साकर का
परिवार समूह बाराक के प्रति सच्चा था। वे व्यक्ति
पैदल ही घाटी में भेजे गए। रूबेन के सैनिक बड़बड़ाए,
वे क्या करें।
16भेड़शाले के दीवार* से लगे क्यों तुम सभी बैठे
हो? रूबेन के वीर सैनिकों ने युद्ध का दृढ़ निश्चय
किया। किन्तु वे अपनी भेड़ों के लिए संगीत को सुनते
रहे घर बैठे।*
17गिलाद के लोग* यरदन नदी के पार अपने डेरों
में पड़े रहे। ऐ, दान के लोगों, जहाँ तक बात तुम्हारी
है– तुम जहाजों के साथ क्यों चिपके रहे? आशेर के
लोग सागर तट परपड़े रहे। उन्होंने अपने सुरक्षित
बन्दरगाहों में डेरा डाला।
18किन्तु जबूलून के लोगों ने और नप्ताली के लोगों
ने, मैदान के ऊँचे क्षेत्रों में युद्ध के खतरे में जीवन को
डाला। 19राजा आए, वे लड़े,उस समय कनान का राजा,
तानक शहर में मगिद्दो के जलाशय पर लड़ा किन्तु वे
इस्राएल के लोगों की कोई सम्पत्ति न ले जा सके!
20गगन से नक्षत्रों ने युद्ध किया। नक्षत्रों ने अपने पथ
से, सीसरा से युद्ध किया।
21कीशोन नदी, सीसरा के सैनिकों को बहा ले गई,
वह प्राचीन नदी–कीशोन नदी। मेरी आत्मा, शक्ति से
धावा बोलो!
22उस समय अश्वों की टापों ने भूमि पर हथौड़ा
चलाया। सीसरा के अश्व भागते गए, भागते गए।
23यहोवा के दूत ने कहा, "मेरोज नगर को अभिशाप
दो। इसके लोगों को भीषण अभिशाप दो! योद्धाओं के
साथ वे यहोवा की सहायता करने नहीं आए।"
24केनी हेबेर की पत्नी याएल सभी स्त्रियों में से सबसे
अधिक धन्य होगी।
25सीसरा ने मांगा जल, किन्तु याएल ने दिया दूध,
शासक के लिये उपयुक्त कटोरे में, वह उसे मलाई
लाई।
26याएल बाहर गई, लाई खूँटी तम्बू की। उसके दायें
कर में हथौड़ा आया श्रमिक काम लाते जिसे और
उसने सीसरा पर चलाया हथौड़ा। उसने किया चूर सिर
उसका, उसने उसके सिर को बेधा एक ओर से।
27डूबा वह याएल के पैरों बीच। वह मर गया। वह पड़
गया वहीं। डूबा वह उसके पैरों बीच। वह मर गया जहाँ
सीसरा डूबा। वहीं वह गिरा, मर गया!
28सीसरा की माँ, देखती खिड़की से और पर्दो से
झांकती हुई चीख उठी। "सीसरा के रथ को विलम्ब
क्यों आने में? सीसरा के रथ के अश्वों के हिनहिनाने
में देर क्यों?"
29सबसे चतुर उसकी सेविकायें उत्तर उसे देती, हाँ
सेविका उसे उत्तर देती:
30"निश्चय ही उन्होंने विजय पाई है निश्चय ही
पराजितों की वस्तुएँ वे ले रहे हैं! निश्चय ही वे बाँटते हैं
आपस में वस्तुओं को! एक लड़की या दो, दी जा रही
हर सैनिक को। संभवत: सीसरा ले रहा है, कोई रंगा
वस्त्र। संभवत: एक कढ़े वस्त्र का टुकड़ा हो, या
विजेता सीसरा पहनने के लिए, दे कढे किनारी युक्त
वस्त्र।"
31हे यहोवा! इस तरह तेरे, सब शत्रु मर–मिट जायें।
किन्तु वे लोग सब जो प्यार करते हैं तुझको ज्वलित–दीप्त
सूर्य सम शक्तिशाली बने!
इस प्रकार उस प्रदेश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

मिद्यानी इस्राएल के लोगों से युद्ध करते हैं

6 यहोवा ने फिर देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर
रहे हैं। इसलिए सात वर्ष तक यहोवा ने मिद्यानी
लोगों को इस्राएल को पराजित करने दिया।
2मिद्यानी लोग बहुत शक्तिशाली थे तथा इस्राएल के
लोगों के प्रति बहुत क्रूर थे। इसलिए इस्राएल के लोगों ने
पहाड़ों में बहुत से छिपने के स्थान बनाए। उन्होंने अपना
भोजन भी गुफाओं और कठिनाई से पता लगाए जा
सकने वाले स्थानों में छिपाए। 3उन्होंने यह किया, क्योंकि

उस समय ... साथ आये या "उस समय जो लोग बचे थे सम्मानितों पर शासन करते थे। यहोवा के लोगों ने मेरे लिये योद्धाओं के साथ शासन किया।

अमालेक के पहाड़ी प्रदेश यह क्षेत्र उस प्रदेश का भाग था जिसमें एप्रैम का परिवार समूह बसा था। देखें न्यायियों 12:15

भेड़शाले के दीवार या सम्भवत: "शिविर समारोह" या "काठी के थैले।"

रूबेन के ... घर बैठे यह गीत इन लोगों पर व्यंग्य करने के लिये है क्योंकि इन्होंने सीसरा के विरूद्ध युद्ध में सहायता नहीं की।

गिलाद के लोग वे लोग थे जो यरदन नदी के पूर्व के प्रदेश में थे।

मिद्यानी और अमालेकी लोग पूर्व से सदा आते थे और
उनकी फसलों को नष्ट करते थे। 4वे लोग उस प्रदेश
में डेरे डालते थे और उस फसल को नष्ट करते थे जो
इस्राएल के लोग लगाते थे। अज्जा नगर के निकट तक
के प्रदेश की इस्राएल के लोगों की फसल को वे लोग
नष्ट करते थे। वे लोग इस्राएल के लोगों के खाने के
लिये कुछ भी नही छोड़ते थे। वे उनके लिए भेड़, या
पशु या गधे भी नहीं छोड़ते थे। 5मिद्यानी लोग आए और
उन्होंने उस प्रदेश में डेरा डाला। वे अपने साथ अपने
परिवारों और जानवरों को भी लाए। वे इतने अधिक थे
जितने टिड्डियों के दल। उन लोगों और उनके ऊँटों
की संख्या इतनी अधिक थी कि उनको गिनना संभव
नहीं था। ये सभी लोग उस प्रदेश में आए और उसे रौंद
डाला। 6इस्राएल के लोग मिद्यानी लोगों के कारण बहुत
गरीब हो गए। इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को
सहायता के लिए रो कर पुकारा।

7मिद्यानियों ने वे सभी बुरे काम किये। इसलिये
इस्राएल के लोग यहोवा से सहायता के लिए रो कर
चिल्लाये। 8इसलिए यहोवा ने उनके पास एक नबी
भेजा। नबी ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा, इस्राएल
का परमेश्वर यह कहा है कि, 'तुम लोग मिस्र देश में
दास थे। मैंने तुम लोगों को स्वतन्त्र किया और मैं उस
देश से तुम्हें बाहर लाया। 9मैंने मिस्र के शक्तिशाली
लोगों से तुम्हारी रक्षा की। तब कनान के लोगों ने
तुमको कष्ट दिया। इसलिए मैंने फिर तुम्हारी रक्षा की।
मैंने उन लोगों से उनका देश छुड़वाया और मैंने उनका
देश तुम्हें दिया।' 10तब मैंने तुमसे कहा, 'मैं यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर हूँ। तुम लोग एमोरी लोगों के प्रदेश में
रहोगे, किन्तु तुम्हें उनके असत्य देवताओं की पूजा नहीं
करनी चाहिए।' परन्तु तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का
पालन नहीं किया।"

यहोवा का दूत गिदोन के पास आता है

11उस समय, यहोवा का दूत गिदोन नामक व्यक्ति के
पास आया। यहोवा का दूत आया और ओप्रा नामक
स्थान पर एक बांज के पेड़ के नीचे बैठा। यह बांज का
पेड़ योआश नामक व्यक्ति का था। योआश अबीएजेरी
लोगों में से एक था। योआश गिदोन का पिता था।
गिदोन कुछ गेहूँ को दाखमधु निकालने के यंत्र में कूट
रहा था। यहोवा का दूत गिदोन के पास बैठा। गिदोन
मिद्यानी लोगों से अपना गेंहूँ छिपाने का प्रयत्न कर रहा
था। 12यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ और
उससे कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ है, तुम जैसे शक्तिशाली
सैनिकों के साथ है।"

13तब गिदोन ने कहा, "महोदय, मैं शपथ खाकर
कहता हूँ कि यदि यहोवा हमारे साथ है तो हम लोगों
को इतने कष्ट क्यों हैं? हम लोगों ने सुना है कि उसने
हमारे पूर्वजों के लिए अद्भुत कार्य किये थे। हमारे
पूर्वजों ने हम लोगों से कहा कि यहोवा हम लोगों को
मिस्र से बाहर लाया। किन्तु अब यहोवा ने हम लोगों को
छोड़ दिया है। यहोवा ने मिद्यानी लोगों को हम लोगों को
हराने दिया।" 14यहोवा गिदोन की ओर मुड़ा और उससे
बोला, "अपनी शक्ति का प्रयोग करो। जाओ और मिद्यानी
लोगों से इस्राएल के लोगों की रक्षा करो। क्या तुम यह
नहीं समझते कि वह मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें भेज रहा
हूँ?"

15किन्तु गिदोन ने उत्तर दिया और कहा, "महोदय,
क्षमा करें, मैं इस्राएल की रक्षा कैसे कर सकता हूँ?
मेरा परिवार मनश्शे के परिवार समूह में सबसे कमजोर
है और मैं अपने परिवार मे सबसे छोटा हूँ।"

16यहोवा ने गिदोन को उत्तर दिया और कहा, "मैं
निश्चय ही मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करने
के लिये तुम्हारे साथ रहूँगा। यह ऐसा मालूम होगा कि
तुम एक व्यक्ति के विरुद्ध लड़ रहे हो।"

17तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "यदि तू मुझ से प्रसन्न
है तो तू प्रमाण दे कि तू सचमुच यहोवा है। 18कृपा
करके तू यहाँ रुक। जब तक मैं लौट न आऊँ तब तक
तू न जा। मुझें मेरी भेंट लाने दे और उसे तेरे सामने
रखने दे।" अत: यहोवा ने कहा, "मैं तब तक प्रतीक्षा
करुँगा जब तक तुम लौटते नहीं।"

19इसलिए गिदोन गया और उसने एक जवान बकरा
खौलते पानी में पकाया। गिदोन ने लगभग एक एपा
आटा भी लिया और अखमीरी रोटियाँ बनाई। तब गिदोन
ने माँस को एक टोकरे में तथा पके माँस के शोरबे को
एक बर्तन में लिया। गिदोन ने माँस, पके माँस के
शोरबा और अखमीरी रोटियों को निकाला। गिदोन ने
वह भोजन बांज के पेड़ के नीचे यहोवा को दिया।

20परमेश्वर के दूत ने गिदोन से कहा, "माँस और
अखमीरी रोटियों को वहाँ चट्टान पर रखो। तब शोरबे
को गिराओ।" गिदोन ने वैसा ही किया जैसा करने को
कहा गया था।

21यहोवा के दूत ने अपने हाथ में एक छड़ी ले रखी
थी। यहोवा के दूत ने माँस और रोटियों को छड़ी के
सिरे से छुआ। तब चट्टान से आग जल उठी। गोश्त
और रोटियाँ पूरी तरह जल गई। तब यहोवा का दूत
अर्न्तध्यान हो गया। 22तब गिदोन ने समझा कि वह
यहोवा के दूत से बातें कर रहा था। इसलिए गिदोन
चिल्ला उठा, "सर्वशक्तिमान यहोवा महान है। मैंने यहोवा
के दूत को आमने–सामने देखा है।"

23किन्तु यहोवा ने गिदोन से कहा, "शान्त रहो।" डरो
नहीं। तुम मरोगे नहीं।*

तुम मरोगे नहीं गिदोन ने सोचा कि वह मर जाएगा क्योंकि उसने यहोवा को प्रत्यक्ष देखा है।

24इसलिए गिदोन ने यहोवा की उपासना के लिए उस
स्थान पर एक वेदी बनाई। गिदोन ने उस वेदी का नाम
"यहोवा शान्ति है" रखा। वह वेदी अब तक ओप्रा में
खड़ी है। ओप्रा वहीं है जहाँ एजेरी लोग रहते हैं।

गिदोन बाल की वेदी को गिरा डालता है

25उसी रात यहोवा ने गिदोन से बाते कीं। यहोवा ने
गिदोन से कहा, "अपने पिता के उस प्रौढ़ बैल को लो
जो सात वर्ष का है। तुम्हारे पिता की असत्य देवता बाल
की एक वेदी है। उस वेदी की बगल में एक लकड़ी का
खम्भा भी है। खम्भा असत्य देवी अशेरा के सम्मान के
लिए बनाया गया था। बैल का उपयोग बाल की वेदी को
गिराने के लिये करो तथा अशेरा के खम्भे को काट
दो। 26तब यहोवा, अपने परमेश्वर के लिए उचित प्रकार
की वेदी बनाओ। इस ऊँचे स्थान पर वह वेदी बनाओ।
तब प्रौढ़ बैल को मारो और इस वेदी पर उसे जलाओ।
अशेरा के खम्भे की लकड़ी का उपयोग अपनी भेंट
को जलाने के लिए करो।"

27इसलिए गिदोन ने अपने दस नौकरों को लिया और
वही किया जो यहोवा ने करने को कहा था। किन्तु
गिदोन डर रहा था कि उसका परिवार और उस नगर
के लोग देख सकते हैं कि वह क्या कर रहा है। गिदोन
ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा। किन्तु
उसने यह रात में किया, दिन में नहीं। 28अगली सुबह
नगर के लोग सोकर उठे और उन्होंने देखा कि बाल
की वेदी नष्ट कर दी गई है। उन्होंने यह भी देखा कि
अशेरा का खम्भा काट डाला गया है। अशेरा का खम्भा
बाल की वेदी के ठीक पीछे गिरा पड़ा था। उन लोगों ने
उस वेदी को भी देखा जिसे गिदोन ने बनाया था और
उन्होंने उस वेदी पर बलि दिये गए बैल को भी देखा।

29नगर के लोगों ने एक दूसरे को देखा और कहा,
"हमारी वेदी को किसने गिराया? हमारे अशेरा के
खम्भे किसने काटे? इस नयी वेदी पर किसने इस बैल
की बलि दी?" उन्होंने कई प्रश्न किये और यह पता
लगाना चाहा कि वे काम किसने किये। किसी ने कहा,
"योआश के पुत्र गिदोन ने यह काम किया।"

30इसलिए नगर के लोग योआश के पास आए। उन्होंने
योआश से कहा, "तुम्हें अपने पुत्र को बाहर लाना
चाहिए। उसने बाल की वेदी को गिराया है और उसने
उस अशेरा के खम्भे को काटा है जो उस वेदी की
बगल में था। इसलिए तुम्हारे पुत्र को मारा जाना
चाहिए।"

31तब योआश ने उस भीड़ से कहा जो उसके चारों
ओर खड़ी थी। योआश ने कहा, "क्या तुम बाल का पक्ष
लेने जा रहे हो? क्या तुम बाल की रक्षा करने जा रहे
हो? यदि कोई बाल का पक्ष लेता है तो उसे सवेरे मार
दिए जाने दो। यदि बाल सचमुच देवता है तो उसे अपनी
रक्षा स्वयं करने दो, यदि कोई उस वेदी को गिराता है।"
32योआश ने कहा, "यदि गिदोन ने बाल की वेदी को
गिराया तो बाल को उससे संघर्ष करने दो।" अत: उस
दिन योआश ने गिदोन को एक नया नाम दिया। उसने
उसे यरुब्बाल कहा।

गिदोन मिद्यान के लोगों को हराता है

33मिद्यानी, अमालेकी एवं पूर्व के अन्य सभी लोग
इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये एक
साथ मिले। वे लोग यरदन नदी के पार गए और उन्होंने
यिज्रेल की घाटी* में डेरा डाला। 34किन्तु गिदोन पर
यहोवा का आत्मा उतरा और उसे बड़ी शक्ति प्रदान
की। गिदोन ने अबीएजेरी लोगों को अपने साथ चलने
के लिए तुरही बजाई। 35गिदोन ने मनश्शे परिवार समूह
के सभी लोगों के पास दूत भेजे। उन दूतों ने मनश्शे के
लोगों से अपने हथियार निकालने और युद्ध के लिए
तैयार होने को कहा। गिदोन ने आशेर, जबूलून और
नप्ताली के परिवार समूहों को भी दूत भेजे। इसलिए वे
परिवार समूह भी गिदोन से और उसके आदमियों से
मिलने गए।

36तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "तूने मुझसे कहा कि
तू इस्राएल के लोगों की रक्षा करने में मेरी सहायता
करेगा। मुझे प्रमाण दे। 37मैं खलिहान* के फर्श पर
एक भेड़ का ऊन रखता हूँ। यदि भेड़ के ऊन पर ओस
की बूँदें होंगी, जबकि सारी भूमि सूखी है, तब मैं समझूँगा
कि तू अपने कहने के अनुसार मेरा उपयोग इस्राएल
की रक्षा करने में करेगा।"

38और यह ठीक वैसा ही हुआ। गिदोन अगली सुबह
उठा और भेड़ के ऊन को निचोड़ा। वह भेड़ के ऊन
से प्याला भर पानी निचोड़ सका।

39तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, "मुझ पर क्रोधित
न हो। मुझे केवल एक और प्रश्न करने दे। मुझे भेड़
के ऊन से एक बार और परीक्षण करने दे। इस समय
भेड़ के ऊन को उस दशा में सूखा रहने दे जब इसके
चारों ओर की भूमि ओस से भीगी हो।" 40उस रात
परमेश्वर ने वही किया। केवल भेड़ की ऊन ही सूखी
थी, किन्तु चारों ओर की भूमि ओस से भीगी थी।

7 सवेरे प्रात:काल, यरुब्बाल (गिदोन) और उसके
सभी लोगों ने अपने डेरे हरोद के झरने पर लगाए।
मिद्यानी लोग गिदोन और उसके आदमियों के उत्तर में
डेरा डाले थे। मिद्यानी लोग मोरे नामक पहाड़ी के नीचे

यिज्रेल की घाटी इस्साकार के परिवार समूह के क्षेत्र में यह घाटी
स्थित थी। यह चौड़ी और उपजाऊ घाटी है। न्यायियों 5:19 में
कथित मेगिद्दो और तानक नगरों सहित इसमें कई महत्वपूर्ण
नगर थे।

खलिहान वह स्थान जहाँ लोग गेहूँ को उसके डंठल के अन्य
भागों से अलग करने के लिये पीटते हैं।

घाटी में डेरा डाले पड़े थे। 2तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तुम्हारे आदमियों की सहायता मिद्यानी लोगों को हराने के लिए करने जा रहा हूँ। किन्तु तुम्हारे पास इस काम के लिए आवश्यकता से अधिक व्यक्ति हैं। मैं नहीं चाहता कि इस्राएल के लोग मुझे भूल जायें और शेखी मारें कि उन्होंने स्वयं अपनी रक्षा की। 3इसलिए अपने लोगों में घोषणा करो। उनसे कहो, 'जो कोई डर रहा हो, अपने घर लौट सकता है।'"

इस प्रकार गिदोन ने लोगों की परीक्षा ली। * बाईस हजार व्यक्तियों ने गिदोन को छोड़ा और वे अपने घर लौट गए। किन्तु दस हजार फिर भी डटे रहे।

4तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "अब भी आवश्यकता से अधिक लोग हैं। इन लोगों को जल के पास ले जाओ और वहाँ मैं इनकी परीक्षा तुम्हारें लिये करूँगा। यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारे साथ जायेगा' तो वह जायेगा। किन्तु यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारें साथ नहीं जाएगा।' तो वह नहीं जाएगा।"

5इसलिए गिदोन लोगों को जल के पास ले गया। उस जल के पास यहोवा ने गिदोन से कहा, "इस प्रकार लोगों को अलग करो: जो व्यक्ति कुत्ते की तरह लपलप करके जल पीएंगे, वे एक वर्ग में होंगे। जो पीने के लिए झुकेंगे, दूसरे वर्ग में होगें।"

6वहाँ तीन सौ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने जल मुँह तक लाने के लिए अपने हाथों का उपयोग किया और उसे कुत्ते की तरह लपलप करके पिया। बाकी लोग घुटनों के बल झुके और उन्होंने जल पीया।

7तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तीन सौ व्यक्तियों का उपयोग करूँगा जिन्होंने कुत्ते की तरह लपलप करके जल पिया। मैं उन्हीं लोगों का उपयोग तुम्हारी रक्षा करने के लिए करूँगा और मैं तुम्हें मिद्यानी लोगों को परास्त करने दूँगा। अन्य लोगों को अपने घर लौट जाने दो।"

8इसलिए गिदोन ने इस्राएल के शेष व्यक्तियों को उनके घर भेज दिया। किन्तु गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को अपने साथ रखा। उन तीन सौ आदमियों ने अन्य जाने वाले आदमियों के भोजन, सामग्री और तुरहियों को रख लिया। अभी मिद्यानी लोग, गिदोन के नीचे घाटी में डेरा डाले हुए थे। 9रात को यहोवा ने गिदोन से बातें की। यहोवा ने उससे कहा, "उठो गिदोन, लोगों के डेरों में जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें उन लोगों को हराने दूँगा। 10किन्तु यदि तुम अकेले वहाँ जाने से डरते हो तो अपने नौकर फूरा को अपने साथ ले लो। 11जब तुम मिद्यानी लोगों के डेरे के पास जाओ तो यह सुनो कि वे लोग क्या कह रहे हैं। जब तुम यह सुन लोगे कि वे क्या कह रहे हैं तब तुम उस डेरे पर आक्रमण करने से नहीं डरोगे।" इसलिए गिदोन और उसका नौकर फूरा दोनों शत्रु के डेरे की छोर पर पहुँचे। 12मिद्यानी, अमालेकी तथा पूर्व के अन्य सभी लोग उस घाटी में डेरा डाले थे। वहाँ वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि टिड्डी–दल से प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन लोगों के पास इतने ऊँट थे, जितने समुद्र के किनारे बालू के कण।

13जब गिदोन शत्रुओं के डेरे में पहुँचा, उसने एक व्यक्ति को बातें करते सुना। वह व्यक्ति अपने देखे हुए स्वप्न को उसे बता रहा था। वह व्यक्ति कह रहा था। "मैंने यह स्वप्न देखा कि मिद्यान के लोगों के डेरे में एक गोल रोटी चक्कर खाती हुई आई। उस रोटी ने डेरे पर इतनी कड़ी चोट की कि डेरा पलट गया और चौड़ा होकर गिर गया।"

14उस व्यक्ति का मित्र उस स्वप्न का अर्थ जानता था। उस व्यक्ति के मित्र ने कहा, "तुम्हारे स्वप्न का केवल एक ही अर्थ है। तुम्हारा स्वप्न योआश के पुत्र गिदोन की शक्ति के बारे में है। वह इस्राएल का है। इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर मिद्यानी लोगों की सारी सेना को गिदोन द्वारा परास्त करायेगा।"

15जब गिदोन ने स्वप्न के बारे में सुना और उसका अर्थ समझा तो वह परमेश्वर के प्रति झुका। तब गिदोन इस्राएली लोगों के डेरे में लौट गया। गिदोन ने लोगों को बाहर बुलाया, "तैयार हो जाओ। यहोवा हम लोगों को मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करेगा।" 16तब गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को तीन दलों में बाँटा। गिदोन ने हर एक व्यक्ति को एक तुरही और एक खाली घड़ा दिया। हर एक घड़े में एक जलती मशाल थी। 17तब गिदोन ने लोगों से कहा, "मुझे देखते रहो और जो मैं करूँ, वही करो। मेरे पीछे–पीछे शत्रु के डेरों की छोर तक चलो। जब मैं डेरे की छोर पर पहुँच जाऊँ, ठीक वही करो जो मैं करूँ। 18तुम सभी डेरों को घेर लो। मैं और मेरे साथ के सभी लोग अपनी तुरही बजाएंगे। जब हम लोग तुरही बजाएंगे तो तुम लोग भी अपनी तुरही बजाना। तब इन शब्दों के साथ घोष करो: 'यहोवा के लिये, गिदोन के लिये।'"

19इस प्रकार गिदोन और उसके साथ के सौ व्यक्ति शत्रु के डेरों की छोर पर आए। वे शत्रु के डेरे में उनके पहरेदारों की बदली के ठीक बाद आए। यह आधी रात को हुआ। गिदोन और उसके व्यक्तियों ने तुरहियों को बजाया तथा अपने घड़ों को फोड़ा। 20तब गिदोन के तीनों दलों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और अपने घड़ों को फोड़ा। उसके लोग अपने बाँये हाथ में मशाल लिये और दाँये हाथ मे तुरहियाँ लिए हुए थे। जब वे लोग तुरहियाँ बजाते तो उद्घोष करते, "यहोवा के लिए तलवार, गिदोन के लिए तलवार।"

21गिदोन का हर एक व्यक्ति डेरे के चारों ओर अपनी जगह पर खड़ा रहा। किन्तु डेरों के भीतर मिद्यानी

इस प्रकार ... परीक्षा ली हिब्रू में, "वे गिलाद पर्वत छोड़ सकते हैं।"

लोग चिल्लाने और भागने लगे। 22जब गिदोन के तीन सौ व्यक्तियों ने अपनी तुरहियों को बजाया तो यहोवा ने मिद्यानी लोगों को परस्पर एक दूसरे को तलवारों से मरवाया। शत्रु की सेना उस बेतशित्ता नगर को भागी जो सरेरा नगर की ओर है। वे लोग उस आबेलमहोला नगर की सीमा तक भागे जो तब्बात नगर के निकट है।

23तब नप्ताली, आशेर और मनश्शे के परिवारों के सैनिकों को मिद्यानी लोगों का पीछा करने को कहा गया। 24गिदोन ने एप्रैम के सारे पहाड़ी क्षेत्र में दूत भेजे। दूतों ने कहा, "आगे आओ और मिद्यानी लोगों पर आक्रमण करो। बेतबारा तक नदी पर और यरदन नदी पर अधिकार करो। यह मिद्यानी लोगों के वहाँ पहुँचने से पहले करो।" इसलिए उन्होंने एप्रैम के परिवार समूह से सभी लोगों को बुलाया। उन्होंने बेतबारा तक नदी पर अधिकार किया।

25एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों के दो प्रमुखों को पकड़ा। इन दोनों प्रमुखों का नाम ओरेब और जेब था। एप्रैम के लोगों ने ओरेब को ओरेब की चट्टान नामक स्थान पर मार डाला। उन्होंने जेब को जब दाखमधु के कुण्ड नामक स्थान पर मारा। एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों का पीछा करना जारी रखा। किन्तु पहले उन्होंने ओरेब और जेब के सिरों को काटा और सिरों को गिदोन के पास ले गए। गिदोन यरदन नदी को पार करने वाले घाट पर था।

8 एप्रैम के लोग गिदोन से रुष्ठ थे। जब एप्रैम के लोग गिदोन से मिले, उन्होंने गिदोन से पूछा, "तुमने हम लोगों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? जब तुम मिद्यानी लोगों के विरुद्ध लड़ने गए तो हम लोगों को क्यों नहीं बुलाया?" एप्रैम के लोग गिदोन पर क्रोधित थे।

2किन्तु गिदोन ने एप्रैम के लोगों को उत्तर दिया, "मैंने उतनी अच्छी तरह युद्ध नहीं किया जितनी अच्छी तरह आप लोगों ने किया। क्या यह सत्य नहीं है कि फसल लेने के बाद तुम अपनी अंगूर की बेलों में जो अंगूर बिना तोड़े छोड़ देते हो। वह मेरे परिवार, अबीएजेर के लोगों की पूरी फसल से अधिक होते हैं। 3इसी प्रकार इस बार भी तुम्हारी फसल अच्छी हुई है। यहोवा ने तुम लोगों को मिद्यानी लोगों के राजकुमारों ओरेब और जेब को पकड़ने दिया। मैं अपनी सफलता को तुम लोगों द्वारा किये गए काम से कैसे तुलना कर सकता हूँ?" जब एप्रैम के लोगों ने गिदोन का उत्तर सुना तो वे उतने क्रोधित न रहे, जितने वे थे।

गिदोन दो मिद्यानी राजाओं को पकड़ता है

4तब गिदोन और उसके तीन सौ व्यक्ति यरदन नदी पर आए और उसके दूसरे पार गए। किन्तु वे थके और भूखे* थे। 5गिदोन ने सुक्कोत नगर के लोगों से कहा, "मेरे सैनिकों को कुछ खाने को दो। मेरे सैनिक बहुत थके हैं। हम लोग अभी तक जेबह और सल्मुन्ना का पीछा कर रहे हैं जो मिद्यानी लोगों के राजा हैं।"

6सुक्कोत नगर के प्रमुखों ने गिदोन से कहा, "हम तुम्हारे सैनिकों को कुछ खाने को क्यों दें? तुमने जेबह और सल्मुन्ना को अभी तक पकड़ा नहीं है।"

7तब गिदोन ने कहा, "तुम लोग हमें भोजन नहीं दोगे। यहोवा मुझे जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ने में सहायता करेगा। उसके बाद मैं यहाँ लौटूँगा और मरुभूमि के काँटो एवं कंटीली झाड़ियों से तुम्हारी चमड़ी उधेड़ूँगा।"

8गिदोन ने सुक्कोत नगर को छोड़ा और पनूएल नगर को गया। गिदोन ने जैसे सुक्कोत के लोगों से भोजन माँगा था वैसे ही पनूएल के लोगों से भी भोजन माँगा। किन्तु पनूएल के लोगों ने उसे वही उत्तर दिया जो सुक्कोत के लोगों ने उत्तर दिया था।

9इसलिये गिदोन ने पनूएल के लोगों से कहा, "जब मैं विजय प्राप्त करुँगा तब मैं यहाँ आऊँगा और तुम्हारी इस मीनार को गिरा दूँगा।"

10जेबह, सल्मुन्ना और उसकी सेनाएं कर्कोर नगर में थीं। उसकी सेना में पन्द्रह हजार सैनिक थे। पूर्व के लोगों की सारी सेना के केवल ये ही सैनिक बचे थे। उस शक्तिशाली सेना के एक लाख बीस हजार वीर सैनिक पहले ही मारे जा चुके थे। 11गिदोन और उसके सैनिकों ने खानाबदोशों के मार्ग को अपनाया। वह मार्ग नोबह और योग्बहा नगरों के पूर्व में है। गिदोन कर्कोर नगर में आया और उसने शत्रु पर धावा बोला। शत्रु की सेना को आक्रमण की उम्मीद नहीं थी। 12मिद्यानी लोगों के राजा जेबह और सल्मुन्ना भाग गए। किन्तु गिदोन ने पीछा किया और उन राजाओं को पकड़ लिया। गिदोन और उसके लोगों ने शत्रु सेना को हरा दिया।

13तब योआश का पुत्र गिदोन युद्ध से लौटा। गिदोन और उसके सैनिक हेरेस दर्रा नामक दर्रे से होकर लौटे। 14गिदोन ने सुक्कोत के एक युवक को पकड़ा। गिदोन ने युवक से कुछ प्रश्न पूछे। युवक ने कुछ नाम गिदोन के लिए लिखे। युवक ने5सुक्कोत के प्रमुखों और अग्रजों के नाम लिखे। उसने सतहत्तर व्यक्तियों के नाम दिये।

15तब गिदोन सुक्कोत नगर में आया। उसने नगर के लोगों से कहा, "जेबह और सल्मुन्ना यहाँ हैं। तुमने मेरा मजाक यह कहकर उड़ाया, 'हम तुम्हारे थके सैनिकों के लिए भोजन क्यों दें। तुमने अभी तक जेबह और सल्मुन्ना को नहीं पकड़ा है।'"

16गिदोन ने सुक्कोत नगर के अग्रजों को लिया और उन्हें दण्ड देने के लिए मरुभूमि के काँटों और कंटीली

भूखे प्राचीनतम यूनानी अनुवाद के अनुसार हिब्रू पाठ में 'पीछा करते' हैं।

झाड़ियों से पीटा। 17गिदोन ने पनूएल नगर की मीनार को भी गिरा दिया। तब उसने उन लोगों को मार डाला जो उस नगर में रहते थे।

18अब गिदोन ने जेबह और सल्मुन्ना से कहा, "तुमने ताबोर पर्वत पर कुछ व्यक्तियों को मारा। वे व्यक्ति किस तरह के थे?" जेबह और सल्मुन्ना ने उत्तर दिया, "वे व्यक्ति तुम्हारी तरह थे। उनमें से हर एक राजकुमार के समान था।"

19गिदोन ने कहा, "वे व्यक्ति मेरे भाई और मेरी माँ के पुत्र थे। यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम उन्हें नहीं मारते, तो अब मै भी तुम्हें नहीं मारता।"

20तब गिदोन येतेर की ओर मुड़ा। येतेर गिदोन का सबसे बड़ा पुत्र था। गिदोन ने उससे कहा, "इन राजाओं को मार डालो।" किन्तु येतेर एक लड़का ही था और डरता था। इसलिए उसने अपनी तलवार नहीं निकाली।

21तब जेबह और सल्मुन्ना ने गिदोन से कहा, "आगे बढ़ो और स्वयं हमें मारो। तुम पुरुष हो और यह काम करने के लिये पर्याप्त बलवान हो।" इसलिए गिदोन उठा और जेबह तथा सल्मुन्ना को मार डाला। तब गिदोन ने चाँद की तरह बनी सज्जा को उनके ऊँटों की गर्दन से उतार दिया।

गिदोन एपोद बनाता है

22इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "तुमने हम लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। इसलिए हम लोगों पर शासन करो। हम चाहते हैं कि तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे पौत्र हम लोगों पर शासन करें।"

23किन्तु गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा तुम्हारा शासक होगा न तो मैं तुम लोगों के ऊपर शासन करूँगा और न ही मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर शासन करेगा।"

24इस्राएल के लोगों ने जिन्हें हराया, उनमें कुछ इश्माएली लोग थे। इश्माएली लोग सोने की कान की बालियाँ पहनते थे। इसलिए गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, "मै चाहता हूँ कि तुम मेरे लिये यह काम करो। मैं तुम में से हर एक से यह चाहता हूँ कि तुम लोगों ने युद्ध में जो पाया उसमें से एक-एक कान की बाली हमें दो।"

25अत: इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "जो तुम चाहते हो उसे हम प्रसन्नता से देंगे।" इसलिए उन्होंने भूमि पर एक अंगरखा बिछाया। हर एक व्यक्ति ने अंगरखे पर एक कान की बाली फेंकी। 26जब वे बालियाँ इकट्ठी करके तौली गई तो वे लगभग तैंतालीस पौंड निकलीं। इस वजन का सम्बन्ध उन चीज़ों के वजन से नहीं है जिन्हें इस्राएल के लोगों ने गिदोन को अन्य भेंटों के रूप में दिया था। उन्होंने चाँद के आकार और आँसू की बूँद के आकार के आभूषण भी उसे दिये और उन्होंने उसे बैंगनी रंग के चोगे भी दिये। ये वे चीज़ें थीं, जिन्हें मिद्यानी लोगों के राजाओं ने पहना था। उन्होंने मिद्यानी लोगों के राजाओं के उँटो की जंजीरें भी उसे दीं। 27गिदोन ने सोने का उपयोग एपोद बनाने के लिये किया। उसने एपोद को अपने निवास के उस नगर में रखा जिसे ओप्रा कहा जाता था। इस्राएल के सभी लोग एपोद को पूजते थे। इस प्रकार इस्राएल के लोग यहोवा पर विश्वास करने वाले नहीं थे-वे एपोद की पूजा करते थे। वह एपोद एक जाल बन गया, जिसने गिदोन और उसके परिवार से पाप करवाया।

गिदोन की मृत्यु

28इस प्रकार मिद्यानी लोग इस्राएल के शासन में रहने के लिये मजबूर किये गये। मिद्यानी लोगों ने अब आगे कोई कष्ट नहीं दिया। इस प्रकार गिदोन के जीवन काल मे चालीस वर्षों तक पूरे देश में शान्ति रही।

29योआश का पुत्र यरुब्बाल (गिदोन) अपने घर रहने गया। 30गिदोन के अपने सत्तर पुत्र थे। इसके इतने अधिक पुत्र थे क्योंकि उसकी अनेक पत्नियाँ थीं। 31गिदोन की एक रखैल भी थी। जो शकेम नगर में रहती थी। उस रखैल से भी उसे एक पुत्र था। उसने उस पुत्र का नाम अबीमेलेक रखा।

32इस प्रकार योआश का पुत्र गिदोन पर्याप्त बूढ़ा होने पर मरा। गिदोन उस कब्र में दफनाया गया, जो उसके पिता योआश के अधिकार में थी। वह कब्र ओप्रा नगर में है जहाँ अबीएजेरी लोग रहते हैं। 33ज्योंही गिदोन मरा त्योंही इस्राएल के लोग फिर परमेश्वर के प्रति विश्वास रखने वाले न रहे। वे बाल का अनुसरण करने लगे। उन्होंने बालबरीत को अपना देवता बनाया। 34इस्राएल के लोग यहोवा, अपने परमेश्वर को याद नहीं करते थे, यद्यपि उसने उन्हें उन सभी शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल के लोगों के चारों ओर रहते थे। 35इस्राएल के लोगों ने यरुब्बाल (गिदोन) के परिवार के प्रति कोई भक्ति नहीं दिखाई, यद्यपि उसने उनके लिये बहुत से अच्छे कार्य किये थे।

अबीमेलेक राजा बना

9 अबीमेलेक यरुब्बाल (गिदोन) का पुत्र था। अबीमेलेक अपने उन मामाओं के पास गया जो शकेम नगर में रहते थे। उसने अपने मामाओं और माँ के परिवार से कहा, 2"शकेम नगर के प्रमुखों से यह प्रश्न पूछो: 'यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों से आप लोगों का शासित होना अच्छा है या किसी एक ही व्यक्ति से शासित होना? याद रखो, मैं तुम्हारा सम्बन्धी हूँ।'"

3अबीमेलेक के मामाओं ने शकेम के प्रमुखों से बात की और उनसे वह प्रश्न किया। शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक का अनुसरण करने का निश्चय किया। प्रमुखों ने कहा, "आखिरकार वह हमारा भाई है।"

4इसलिये शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को सत्तर चाँदी के टुकड़े दिये। वह चाँदी बालबरोत देवता के मन्दिर की थी। अबीमेलेक ने चाँदी का उपयोग कुछ व्यक्तियों को काम पर लगाने के लिये किया। ये व्यक्ति खूँखार और बेकार थे। वे अबीमेलेक के पीछे, जहाँ कहीं वह गया, चलते रहे। 5अबीमेलेक ओप्रा नगर को गया। ओप्रा उसके पिता का निवास स्थान था। उस नगर में अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों की हत्या कर दी। वे सत्तर भाई अबीमेलेक के पिता यरुब्बाल के पुत्र थे। उसने सभी को एक पत्थर पर मारा* किन्तु यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र अबीमेलेक से दूर छिप गया और भाग निकला। सबसे छोटे पुत्र का नाम योताम था।

6तब शकेम नगर के सभी प्रमुख और बेतमिल्लो के महल के सदस्य एक साथ आए। वे सभी लोग उस पाषाण–स्तम्भ के निकट के बड़े पेड़ के पास इकट्ठे हुए जो शकेम नगर में था और उन्होंने अबीमेलेक को अपना राजा बनाया।

योताम की कथा

7योताम ने सुना कि शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को राजा बना दिया है। जब उसने यह सुना तो वह गया और गरिज्जीम पर्वत की चोटी पर खड़ा हुआ। योताम ने लोगों को यह कथा चिल्लाकर सुनाई।

शकेम के लोगों, मेरी बात सुनों और तब आपकी बात परमेश्वर सुनेगा।

8एक दिन पेड़ों ने अपने ऊपर शासन करने के लिए एक राजा चुनने का निर्णय किया। पेड़ों ने जैतून के पेड़ से कहा, "तुम हमारे ऊपर राजा बनो।"

9किन्तु जैतून के पेड़ ने कहा, "मनुष्य और ईश्वर मेरी प्रशंसा मेरे तेल के लिये करते हैं। क्या मैं जाकर केवल अन्य पेड़ों पर शासन करने के लिये अपना तेल बनाना बन्द कर दूँ?"

10तब पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से कहा, "आओ और हमारे राजा बनो।"

11किन्तु अंजीर के पेड़ ने उत्तर दिया, "क्या मैं केवल जाकर अन्य पेड़ों पर शासन करने के लिये अपने मीठे और अच्छे फल पैदा करना बन्द करदूँ?"

12तब पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, "आओ और हमारे राजा बनो।"

13किन्तु अंगूर की बेल ने उत्तर दिया, "मेरी दाखमधु मनुष्य और ईश्वर दोनों को प्रसन्न करती है। क्या मुझे केवल जाकर पेड़ों पर शासन करने के लिये अपनी दाखमधु पैदा करना बन्द कर देना चाहिये।"

14अन्त में पेड़ों ने कंटीली झाड़ी से कहा, "आओ और हमारे राजा बनो।"

15किन्तु कंटीली झाड़ी ने पेड़ों से कहा, "यदि तुम सचमुच मुझे अपने ऊपर राजा बनाना चाहते हो तो आओ और मेरी छाया में अपनी शरण बनाओ। यदि तुम ऐसा करना नहीं चाहते तो इस कंटीली झाड़ी से आग निकलने दो, और उस आग को लबानोन के चीड़ के पेड़ों को भी जला देने दो।"

16यदि आप पूरी तरह उस समय ईमानदार थे जब आप लोगों ने अबीमेलेक को राजा बनाया, तो आप लोगों को उससे प्रसन्न होना चाहिए। यदि आप लोगों ने यरुब्बाल और उसके परिवार के लोगों के साथ उचित व्यवहार किया है तो, यह बहुत अच्छा है। यदि आपने यरुब्बाल के साथ वही व्यवहार किया है जो आपको करना चाहिये तो यही अच्छा है। 17किन्तु तनिक सोचें कि मेरे पिता ने आपके लिये क्या किया है? मेरे पिता आप लोगों के लिये लड़े। उन्होंने अपने जीवन को उस समय खतरे में डाला जब उन्होंने आप लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। 18किन्तु अब आप लोग मेरे पिता के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं। आप लोगों ने मेरे पिता के सत्तर पुत्रों को एक पत्थर पर मारा है। आप लोगों ने अबीमेलेक को शकेम का राजा बनाया है। वह मेरे पिता की दासी का पुत्र है। आप लोगों ने अबीमेलेक को केवल इसलिए राजा बनाया है कि वह आपका सम्बन्धी है। 19इसलिये यदि आज आप लोग पूरी तरह यरुब्बाल और उसके परिवार के प्रति ईमानदार रहे हैं, तब अबीमेलेक को अपना राजा मानकर आप प्रसन्न हो सकते हैं और वह भी आप लोगों से प्रसन्न हो सकता है। 20किन्तु यदि आपने उचित नहीं किया है तो, अबीमेलेक शकेम नगर के सभी प्रमुखों और मिल्लो के महल को नष्ट कर डाले। शकेम नगर के प्रमुख भी अबीमेलेक को नष्ट कर डाले।"

21योताम यह सब कहने के बाद भाग खड़ा हुआ। वह भागकर बेर नगर में पहुँचा। योताम उस नगर में रहता था, क्योंकि वह अपने भाई अबीमेलेक से भयभीत था।

अबीमेलेक शकेम के विरुद्ध युद्ध करता है

22अबीमेलेक ने इस्राएल के लोगों पर तीन वर्ष तक शासन किया। 23-24अबीमेलेक ने यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों को मार डाला था। वे अबीमेलेक के अपने भाई थे। शकेम नगर के प्रमुखों ने उन पुत्रों को मारने में उसकी सहायता की थी। इसलिए परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के प्रमुखों के बीच झगड़ा उत्पन्न कराया और शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को नुकसान पहुँचाने के लिये योजना बनाई।

एक पत्थर पर मारा एक ही समय पर मारा।

25शकेम नगर के प्रमुख अबीमेलेक को अब पसन्द
नहीं कर रहे थे। उन लोगों ने पहाड़ियों की चोटियों पर
से जाने वालों पर आक्रमण करने और उनका सब
कुछ लूटने के लिये आदमियों को रखा। अबीमेलेक ने
उन आक्रमणों के बारे में पता लगाया।
26गाल नामक एक व्यक्ति और उसके भाई शकेम
नगर को आए। गाल, एबेद नामक व्यक्ति का पुत्र था।
शकेम के प्रमुखों ने गाल पर विश्वास और उसका
अनुसरण करने का निश्चय किया।
27एक दिन शकेम के लोग अपने बागों में अगूंर
तोड़ने गए। लोगों ने दाखमधु बनाने के लिये अगूंरों को
निचोड़ा और तब उन्होंने अपने देवता के मन्दिर पर
एक दावत दी। लोगों ने खाया और दाखमधु पी। तब
अबीमेलेक को अभिशाप दिया।
28तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, "हम लोग शकेम
के व्यक्ति हैं। हम अबीमेलेक की आज्ञा क्यों माने? वह
अपने को क्या समझता है? यह ठीक है कि अबीमेलेक
यरुब्बाल के पुत्रों में से एक है और अबीमेलेक ने
जबूल को अपना अधिकारी बनाया, यह ठीक है? हमें
अबीमेलेक की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। हमें हमोर
के लोगों की आज्ञा माननी चाहिए। (हमोर शकेम का
पिता था।) 29यदि आप मुझे इन लोगों का सेनापति
बनाते हैं तो मैं अबीमेलेक से मुक्ति दिला दूँगा। मैं उससे
कहूँगा, 'अपनी सेना को तैयार करो और युद्ध के लिये
आओ।'"
30जबूल शकेम नगर का प्रशासक था। जबूल ने वह
सब सुना जो एबेद के पुत्र गाल ने कहा और जबूल बहुत
क्रोधित हुआ। 31जबूल ने अबीमेलेक के पास अरुमा
नगर में दूतों को भेजा। सन्देश यह है: एबेद का पुत्र गाल
और इस के भाई शकेम नगर में आए हैं और तुम्हारे
लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं। गाल पूरे नगर को
तुम्हारे विरुद्ध कर रहा है। 32इसलिए अब तुम्हें और
तुम्हारे लोगों को रात में उठना चाहिये और नगर के
बाहर खेतों मे छिपना चाहिए। 33जब सवेरे सूरज निकले
तो नगर पर आक्रमण कर दो। जब वे लोग लड़ने के
लिये बाहर आएं तो तुम उनका जो कर सको, करो।
34इसलिए अबीमेलेक और सभी सैनिक रात को उठे
और नगर को गए। वे सैनिक चार टुकड़ियों मे बँट गए।
वे शकेम नगर के पास छिप गए। 35एबेद का पुत्र गाल
बाहर निकल कर शकेम नगर के फाटक के प्रवेश
द्वार पर था। जब गाल वहाँ खड़ा था उसी समय अबीमेलेक
और उसके सैनिक अपने छिपने के स्थानों से बाहर
आए।
36गाल ने सैनिकों को देखा। गाल ने जबूल से कहा,
"ध्यान दो, पर्वतों से लोग नीचे उतर रहे हैं।" किन्तु
जबूल ने कहा, "तुम केवल पर्वतों की परछाइयाँ देख
रहे हो। परछाइयाँ लोगों की तरह दिखाई दे रही हैं।"
37किन्तु गाल ने फिर कहा, "ध्यान दो प्रदेश की
नाभि नामक स्थान से लोग बढ़ रहे हैं, और जादूगर के
पेड़ से एक टुकड़ी आ रही है।"*
38तब जबूल ने उससे कहा, "अब तुम्हारी वह बड़ी–बड़ी
बातें कहाँ गई, जो तुम कहते थे, 'अबीमेलेक कौन होता
है, जिसकी अधीनता में हम रहें?' क्या वे वही लोग नहीं
हैं जिनका तुम मजाक उड़ाते थे? जाओ और उनसे
लड़ो।"
39इसलिए गाल शकेम के प्रमुखों को अबीमेलेक से
युद्ध करने के लिये ले गया। 40अबीमेलेक और उसके
सैनिकों ने गाल और उसके आदमियों का पीछा किया।
गाल के लोग शकेम नगर के फाटक की ओर पीछे
भागे। गाल के बहुत से लोग फाटक पर पहुँचने से पहले
मार डाले गए।
41तब अबीमेलेक अरुमा नगर को लौट गया। जबूल
ने गाल और उसके भाइयों को शकेम नगर छोड़ने को
विवश किया। 42अगले दिन शकेम के लोग अपने खेतों
में काम करने को गए। अबीमेलेक ने उसके बारे में
पता लगाया। 43इसलिए अबीमेलेक ने अपने सैनिकों
को तीन टुकड़ियों मे बाँटा। वह शकेम के लोगों पर
अचानक आक्रमण करना चाहता था। इसलिये उसने
अपने आदमियों को खेतों में छिपाया। जब उसने लोगों
को नगर से बाहर आते देखा तो वह टूट पड़ा और उन
पर आक्रमण कर दिया। 44अबीमेलेक और उसके लोग
शकेम नगर के फाटक के पास दौड़ कर आए। अन्य
दो टुकड़ियाँ खेत में लोगों के पास दौड़कर गई और
उन्हें मार डाला। 45अबीमेलेक और उसके सैनिक
शकेम नगर के साथ पूरे दिन लड़े। अबीमेलेक और
उसके सैनिकों ने शकेम नगर पर अधिकार कर लिया
और उस नगर के लोगों को मार डाला। तब अबीमेलेक
ने उस नगर को ध्वस्त किया और उस ध्वंस पर नमक
फेंकवा दिया।
46कुछ लोग शकेम की मीनार के पास रहते थे। जब
उस स्थान के लोगों ने सुना कि शकेम के साथ क्या
हुआ है तब वे सबसे अधिक सुरक्षित उस कमरे में
इकट्ठे हो गए जो एलबरीत देवता का मन्दिर था।
47अबीमेलेक ने सुना कि शकेम की मीनार के सभी
प्रमुख एक साथ इकट्ठे हो गए हैं। 48इसलिए अबीमेलेक
और उसके सभी लोग सलमोन पर्वत पर गए। अबीमेलेक
ने एक कुल्हाड़ी ली और उसने कुछ शाखाएँ काटीं।
उसने उन शाखाओं को अपने कंधों पर रखा। तब
उसने अपने साथ केआदमियों से कहा "जल्दी करो, जो
मैंने किया है, वही करो।"
49इसलिए उन लोगों ने शाखाएँ काटीं और अबीमेलेक
का अनुसरण किया। उन्होंने शाखाओं की ढेर एलबरीत
देवता के मन्दिर के सबसे अधिक सुरक्षित कमरे के

प्रदेश की ... रही है शकेम के करीब की पहाड़ियाँ।

साथ लगाई। तब उन्होंने शाखाओं में आग लगा दी और कमरे में लोगों को जला दिया। इस प्रकार लगभग शकेम की मीनार के निवासी एक हजार स्त्री–पुरुष मर गए।

अबीमेलेक की मृत्य

50तब अबीमेलेक और उसके साथी तेबेस नगर को गए। अबीमेलेक और उसके साथियों ने तेबेस नगर पर अधिकार कर लिया। 51किन्तु तेबेस नगर में एक दृढ़ मीनार थी। उस नगर के सभी स्त्री–पुरुष और उस नगर के प्रमुख उस मीनार के पास भागकर पहुँचे। जब नगर के लोग मीनार के भीतर घुस गए तो उन्होंने अपने पीछे मीनार का दरवाजा बन्द कर दिया। तब वे मीनार की छत पर चढ़ गए। 52अबीमेलेक और उसके साथी मीनार के पास उस पर आक्रमण करने के लिये पहुँचे। अबीमेलेक मीनार की दीवार तक गया। वह मीनार को आग लगाना चाहता था। 53जब अबीमेलेक द्वार पर खड़ा था, उसी समय एक स्त्री ने एक चक्की का पत्थर उसके सिर पर फेंका। चक्की के पाट ने अबीमेलेक की खोपड़ी को चूर–चूर कर डाला। 54अबीमेलेक ने शीघ्रता से अपने उस नौकर से कहा जो उसके शस्त्र ले चल रहा था, "अपनी तलवार निकालो और मुझे मार डालो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे मार डालो जिससे लोग यह न कहें, कि 'एक स्त्री ने अबीमेलेक को मार डाला।'" इसलिए नौकर ने अबीमेलेक में अपनी तलवार घुसेड़ दी और अबीमेलेक मर गया। 55इस्राएल के लोगों ने देखा कि अबीमेलेक मर गया। इसलिए वे सभी अपने घरों को लौट गए।

56इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलेक को उसके सभी किये पापों के लिये दण्ड दिया। अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों को मारकर अपने पिता के विरुद्ध पाप किया था। 57परमेश्वर ने शकेम नगर के लोगों को भी उनके द्वारा किए गए पाप का दण्ड दिया। इस प्रकार योताम ने जो कहा, सत्य हुआ। (योताम यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र था। यरुब्बाल गिदोन था।)

न्यायाधीश तोला

10 अबीमेलेक के मरने के बाद इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिये परमेश्वर द्वारा दूसरा न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम तोला था। तोला पुआ नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुआ दोदो नामक व्यक्ति का पुत्र था। तोला इस्साकार के परिवार समूह का था। तोला शामीर नगर में रहता था। शामीर नगर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। 2तोला इस्राएल के लोगों के लिये तेईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। तब तोला मर गया और शामीर नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश याईर

3तोला के मरने के बाद, परमेश्वर द्वारा एक और न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम याईर था। याईर गिलाद के क्षेत्र में रहता था। याईर इस्राएल के लोगों के लिये बाईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। 4याईर के तीस पुत्र थे। वे तीस पुत्र तीस गधों पर सवार होते थे। वे तीस पुत्र गिलाद क्षेत्र के तीस नगरों की व्यवस्था करते थे। वे नगर "याईर के ग्राम" आज तक कहे जाते हैं। 5याईर मरा और कामोन नगर मे दफनाया गया।

अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ते हैं

6यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए देखा। वे बाल एवं अश्तोरेत की मूर्तियों की पूजा करते थे। वे आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोन और पलिश्तियों के देवताओं की पूजा करते थे। इस्राएल के लोगों ने यहोवा को छोड़ दिया और उसकी सेवा बन्द कर दी। 7इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ। यहोवा ने पलिश्तियों और अम्मोनियों को उन्हें पराजित करने दिया। 8उसी वर्ष उन लोगों ने इस्राएल के उन लोगों को नष्ट किया जो गिलाद क्षेत्र में यरदन नदी के पूर्व रहते थे। यह वही प्रदेश है जहाँ अम्मोनी लोग रह चुके थे। इस्राएल के वे लोग अट्ठारह वर्ष तक कष्ट भोगते रहे। 9तब अम्मोनी लोग यरदन नदी के पार गए। वे लोग यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम लोगों के विरुद्ध लड़ने गए। अम्मोनी लोगों ने इस्राएल के लोगों पर अनेक विपत्तियाँ ढाई।

10इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा, "हम लोगों ने, परमेश्वर, तेरे विरुद्ध पाप किया है। हम लोगों ने अपने परमेश्वर को छोड़ा और बाल की मूर्तियों की पूजा की।"

11यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उत्तर दिया, "तुम लोगों ने मुझे तब रोकर पुकारा जब मिस्री, एमोरी, अम्मोनी तथा पलिश्ती लोगों ने तुम पर प्रहार किये। मैंने तुम्हें इन लोगों से बचाया। 12तुम लोग तब चिल्लाए जब सीदोन के लोगों, अमालेकियों और मिद्यानियों ने तुम पर प्रहार किया। मैंने उन लोगों से भी तुम्हें बचाया। 13किन्तु तुमने मुझको छोड़ा है। तुमने अन्य देवताओं की उपासना की है। इसलिए मैंने तुम्हें फिर बचाने से इन्कार किया है। 14तुम उन देवताओं की पूजा करना पसन्द करते हो। इसलिए उनके पास सहायता के लिये पुकारने जाओ। विपत्ति में पड़ने पर उन देवताओं को रक्षा करने दो।"

15किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा से कहा, "हम लोगों ने पाप किया है। तू हम लोगों के साथ जो चाहता है, कर। किन्तु आज हमारी रक्षा कर।" 16तब इस्राएल के लोगों ने अपने पास के विदेशी देवताओं को फेंक दिया। उन्होंने फिर से यहोवा की उपासना आरम्भ की।

इसलिए जब यहोवा ने उन्हें कष्ट उठाते देखा, तब वह उनके लिए दु:खी हुआ।

यिप्तह प्रमुख चुना गया

17अम्मोनी लोग युद्ध करने के लिये एक साथ इकट्ठे हुए, उनका डेरा गिलाद क्षेत्र में था। इस्राएल के लोग एक साथ इकट्ठे हुए, उनका डेरा मिस्पा नगर में था। 18गिलाद क्षेत्र में रहने वाले लोगों के प्रमुखों ने कहा, "अम्मोन के लोगों पर आक्रमण करने में जो व्यक्ति हमारा नेतृत्व करेगा, वही व्यक्ति, उन सभी लोगों का प्रमुख हो जाएगा जो गिलाद क्षेत्र में रहते हैं।"

11 यिप्तह गिलाद के परिवार समूह से था। वह एक शक्तिशाली योद्धा था। किन्तु यिप्तह एक वेश्या का पुत्र था। उसका पिता गिलाद नाम का व्यक्ति था। 2गिलाद की पत्नी के अनेक पुत्र थे। जब वे पुत्र बड़े हुए तो उन्होंने यिप्तह को पसन्द नहीं किया। उन पुत्रों ने यिप्तह को अपने जन्म के नगर को छोड़ने के लिये विवश किया। उन्होंने उससे कहा, "तुम हमारे पिता की सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं पा सकते। तुम दूसरी स्त्री के पुत्र हो।" 3इसलिये यिप्तह अपने भाइयों के कारण दूर चला गया। वह तोब प्रदेश में रहता था। तोब प्रेदश में कुछ उपद्रवी लोग यिप्तह का अनुसरण करने लगे।

4कुछ समय बाद अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों से लड़े। 5अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ रहे थे। इसलिये गिलाद प्रदेश के अग्रज (प्रमुख) यिप्तह के पास आए। वे चाहते थे कि यिप्तह तोब प्रदेश को छोड़ दे और गिलाद प्रदेश में लौट आए।

6प्रमुखों ने यिप्तह से कहा, "आओ, हमारे प्रमुख बनों, जिससे हम लोग अम्मोनियों के साथ लड़ सकें।"

7किन्तु यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों (प्रमुखों) से कहा, "क्या यह सत्य नहीं कि तुम लोग मुझसे घृणा करते हो? तुम लोगों ने मुझें अपने पिता का घर छोड़ने के लिये विवश किया। अत: जब तुम विपत्ति में हो तो मेरे पास क्यों आ रहे हो?"

8गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "यही कारण है जिससे हम अब तुम्हारे पास आए हैं। कृपया हम लोगों के साथ आओ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध लड़ों। तुम उन सभी लोगों के सेनापति होगे जो गिलाद प्रदेश में रहते हैं।"

9तब यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों से कहा, "यदि तुम लोग चाहते हो कि मैं गिलाद को लौटूँ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध लड़ूँ तो यह बहुत अच्छी बात है। किन्तु यदि यहोवा मुझे विजय पाने में सहायता करे तो मैं तुम्हारा नया प्रमुख बनूँगा।"

10गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "हम लोग जो बातें कर रहे हैं, यहोवा वह सब सुन रहा है। हम लोग यह सब करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं जो तुम हमें करने को कह रहे हो।" 11अत: यिप्तह गिलाद के अग्रजों के साथ गया। उन लोगों ने यिप्तह को अपना प्रमुख तथा सेनापति बनाया। यिप्तह ने मिस्पा नगर में यहोवा के सामने अपनी सभी बातें दुहरायी।

यिप्तह अम्मोनी राजा के पास सन्देश भेजता है

12यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास दूत भेजा। दूत ने राजा को यह सन्देश दिया: "अम्मोनी और इस्राएल के लोगों के बीच समस्या क्या है? तुम हमारे प्रदेश में लड़ने क्यों आए हो?"

13अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के दूत से कहा, "हम लोग इस्राएल के लोगों से इसलिए लड़ रहे हैं क्योंकि इस्राएल के लोगों ने हमारी भूमि तब ले ली जब वे मिस्र से आए थे। उन्होंने हमारी भूमि अर्नोन नदी से यब्बोक नदी और वहाँ से यरदन नदी तक ले ली और अब इस्राएल के लोगों से कहो कि वे हमारी भूमि हमें शान्तिपूर्वक वापस दे दें।"

14अत: यिप्तह का दूत यह सन्देश यिप्तह के पास वापस ले गया। * तब यिप्तह ने अम्मोनी लोगों के राजा के पास फिर दूत भेजे। 15वे यह सन्देश ले गए:

"यिप्तह यह कह रहा है। इस्राएल ने मोआब के लोगों या अम्मोन के लोगों की भूमि नहीं ली। 16जब इस्राएल के लोग मिस्र देश से बाहर आए तो इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए थे। इस्राएल के लोग लाल सागर को गए। तब वे उस स्थान पर गए जिसे कादेश कहा जाता है। 17इस्राएल के लोगों ने एदोम प्रदेश के राजा के पास दूत भेजे थे। दूतों ने कृपा की याचना की थी। उन्होंने कहा था, 'इस्राएल के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो।' किन्तु एदोम के राजा ने अपने देश से हमें नहीं जाने दिया। हम लोगों ने वही सन्देश मोआब के राजा के पास भेजा। किन्तु मोआब के राजा ने भी अपने प्रदेश से होकर नहीं जाने दिया। इसलिए इस्राएल के लोग कादेश में ठहरे रहे।

18तब इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए और एदोम प्रदेश तथा मोआब प्रदेश की छोरों के चारों ओर चक्कर काटते रहे। इस्राएल के लोगों ने मोआब प्रदेश के पूर्व की तरफ से यात्रा की। उन्होंने अपना डेरा अर्नोन नदी की दूसरी ओर डाला। उन्होंने मोआब की सीमा को पार नहीं किया। (अर्नोन नदी मोआब के प्रदेश की सीमा थी।)

19तब इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के पास दूत भेजे। सीहोन हेश्बोन नगर का राजा था। दूतों ने सीहोन से माँग की, "इस्राएल के

अत: यिप्तह ... गया यह वाक्य प्राचीन यूनानी अनुवाद से हैं। हिब्रू पाठ में यह वाक्य नहीं है।

लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो। हम लोग अपने प्रदेश में जाना चाहते हैं। 20किन्तु एमोरी लोगों के राजा सीहोन ने इस्राएल के लोगों को अपनी सीमा पार नहीं करने दी। सीहोन ने अपने सभी लोगों को इकट्ठा किया और यहस पर अपना डेरा डाला। तब एमोरी लोग इस्राएल के लोगों के साथ लड़े। 21किन्तु यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर ने, इस्राएल के लोगों की सहायता, सीहोन और उसकी सेना को हराने में, की। एमोरी लोगों की सारी भूमि इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति बन गई। 22इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों का सारा प्रदेश पाया। यह प्रदेश अर्नोन नदी से यब्बोक नदी तक था। यह प्रदेश मरूभूमि से यरदन नदी तक था।

23यह यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर था जिसने एमोरी लोगों को अपना देश छोड़ने के लिये बलपूर्वक विवश किया और यहोवा ने वह प्रदेश इस्राएल के लोगों को दिया। क्या तुम सोचते हो कि तुम इस्राएल के लोगों से यह छुड़वा दोगे? 24निश्चय ही, तुम उस प्रदेश में रह सकते हो जिसे तुम्हारे देवता कमोश ने तुम्हें दिया है। इसलिये हम लोग उस प्रदेश में रहेंगे, जिसे यहोवा, हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है। 25क्या तुम सिप्पोर नामक व्यक्ति के पुत्र बालाक से अधिक अच्छे हो? वह मोआब प्रदेश का राजा था। क्या उसने इस्राएल के लोगों से बहस की? क्या वह सचमुच इस्राएल के लोगों से लड़ा? 26इस्राएल के लोग हेश्बोन और उसके चारों ओर के नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। इस्राएल के लोग अरोएर नगर और उसकेचारों ओर के नगर में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। इस्राएल के लोग अर्नोन नदी के किनारे के सभी नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। तुमने इस समय में, इन नगरों को वापस लेने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? 27इस्राएल के लोगों ने किसी के विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है। किन्तु तुम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत बड़ी बुराई कर रहे हो। यहोवा को, जो सच्चा न्यायाधीश है, निश्चय करने दो कि इस्राएल के लोग ठीक रास्ते पर हैं या अम्मोनी लोग।"

28अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के इस सन्देश को अनसुना किया।

यिप्तह की प्रतिज्ञा

29तब यहोवा का आत्मा यिप्तह पर उतरा। यिप्तह गिलाद प्रदेश और मनश्शे के प्रदेश से गुजरा। वह गिलाद प्रदेश में मिस्पे नगर को गया। गिलाद प्रदेश के मिस्पे नगर को पार करता हुआ यिप्तह, अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया। 30यिप्तह ने यहोवा को वचन दिया। उसने कहा, "यदि तू एमोरी लोगों को मुझे हराने देता है। 31तो मैं उस पहली चीज को तुझे भेंट करूँगा जो मेरी विजय से लौटने के समय मेरे घर से बाहर आएगी। मैं इसे यहोवा को होमबलि के रूप में दूँगा।"

32तब यिप्तह अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया। यिप्तह अम्मोनी लोगों से लड़ा। यहोवा ने अम्मोनी लोगों को हराने में उसकी सहायता की। 33उसने उन्हें अरोएर नगर से मिन्नीत के क्षेत्र की छोर तक हराया। यिप्तह ने बीस नगरों पर अधिकार किया। उसने अम्मोनी लोगों से आबेलकरामीम नगर तक युद्ध किया। यह अम्मोनी लोगों के लिये बड़ी हार थी। अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों द्वारा हरा दिये गए।

34यिप्तह मिस्पा को लौटा और अपने घर गया। उसकी पुत्री उससे घर से बाहर मिलने आई। वह एक तम्बूरा बजा रही थी और नाच रही थी। वह उसकी एकलौती पुत्री थी। यिप्तह उसे बहुत प्यार करता था। यिप्तह के पास कोई अन्य पुत्री या पुत्र नहीं थे। 35जब यिप्तह ने देखा कि पहली चीज़ उसकी पुत्री ही थी, जो उसके घर से बाहर आई तब उसने दुःख को अभिव्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले और यह कहा, "आह! मेरी बेटी तूने मुझे बरबाद कर दिया। तूने मुझे बहुत दुःखी कर दिया! मैंने यहोवा को वचन दिया था, मैं उसे वापस नहीं ले सकता।"

36तब उसकी पुत्री ने यिप्तह से कहा, "पिता, आपने यहोवा से प्रतिज्ञा की है। अतः वही करें जो आपने करने की प्रतिज्ञा की है। अन्त में यहोवा ने आपके शत्रुओं अम्मोनी लोगों को हराने में सहायता की।"

37तब उसकी पुत्री ने अपने पिता यिप्तह से कहा, "किन्तु मेरे लिये पहले एक काम करो। दो महीने तक मुझे अकेली रहने दो। मुझे पहाड़ों पर जाने दो। मैं विवाह नहीं करूँगी, मेरा कोई बच्चा नहीं होगा। अतः मुझे और मेरी सहेलियों को एक साथ रोने–चिल्लाने दो।"

38यिप्तह ने कहा, "जाओ और वैसा ही करो," यिप्तह ने उसे दो महीने के लिये भेज दिया। यिप्तह की पुत्री और उसकी सहेलियाँ पहाड़ों में रहे। वे उसके लिए रोये– चिल्लाये, क्योंकि वह न तो विवाह करेगी और न ही बच्चे उत्पन्न करेगी।

39दो महीने के बाद यिप्तह की पुत्री अपने पिता के पास लौटी। यिप्तह ने वही किया जो उसने यहोवा से प्रतिज्ञा की थी। यिप्तह की पुत्री का कभी किसी के साथ कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहा। इसलिए इस्राएल में यह रिवाज बन गया। 40इस्राएल की स्त्रियाँ हर वर्ष गिलाद के यिप्तह की पुत्री को याद करती थीं। स्त्रियाँ यिप्तह की पुत्री के लिये हर एक वर्ष चार दिन तक रोती थीं।

यिप्तह और एप्रैम

12 एप्रैम के परिवार समूह के लोगों ने अपने सैनिकों
को इकट्ठा किया। तब वे नदी पार करके
सापोन नगर गए। उन्होंने यिप्तह से कहा, "तुमने अम्मोनी
लोगों से लड़ने में सहायता के लिये हमें क्यों नहीं बुलाया?
हम लोग तुमको और तुम्हारे घर को जला देंगे।"

2यिप्तह ने उन्हें उत्तर दिया, "अम्मोनी लोग हम लोगों
के लिये अनेक समस्यायें उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए
मैं और हमारे लोग उनके विरुद्ध लड़े। मैंने तुम लोगों
को बुलाया, किन्तु तुम लोग हम लोगों की सहायता
करने नहीं आए। 3मैंने देखा कि तुम लोग सहायता नहीं
करोगे। इसलिए मैंने अपना जीवन खतरे में डाला। मैं
अम्मोनी लोगों से लड़ने के लिये नदी के पार गया।
यहोवा ने उन्हें हराने में मेरी सहायता की। अब आज
तुम मेरे विरुद्ध लड़ने क्यों आए हो?"

4तब यिप्तह ने गिलाद के लोगों को एक साथ बुलाया।
वे एप्रैम के परिवार समूह के लोगों के साथ लड़े। वे
एप्रैम के लोगों के विरुद्ध इसलिए लड़े, क्योंकि उन
लोगों ने गिलाद के लोगों का अपमान किया था। उन्होंने
कहा था, "गिलाद के लोगों, तुम लोग एप्रैम के बचे हुए
लोगों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो। तुम लोगों के
पास अपना प्रदेश भी नहीं है। तुम लोगों का एक भाग
एप्रैम में से है तथा दूसरा भाग मनश्शे में से है।" गिलाद
के लोगों ने एप्रैम के लोगों को हराया।

5गिलाद के लोगों ने यरदन नदी के घाटों पर अधिकार
कर लिया। वे घाट एप्रैम प्रदेश तक ले जाते थे। एप्रैम में
से बचा हुआ जो कोई भी नदी पर आता, वह कहता,
"मुझे पार करने दो" तो गिलाद के लोग उससे पूछते,
"क्या तुम एप्रैम में से हो?" यदि वह "नहीं" कहता तो,
6वे कहते, 'शिब्बोलेत शब्द का उच्चारण करो।'" एप्रैम
के लोग उस शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते
थे। वे उसे "सिब्बोलेत" शब्द उच्चारण करते थे। यदि
एप्रैम में से बचा व्यक्ति "सिब्बोलेत" का उच्चारण करता
तो गिलाद के लोग उसे घाट पर मार देते थे। इस प्रकार
उस समय एप्रैम में से बयालीस हजार व्यक्ति मारे गए थे।

7यिप्तह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश छः वर्ष तक
रहा। तब गिलाद का निवासी यिप्तह मर गया। उसे
गिलाद में उसके अपने नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश इबसान

8यिप्तह के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश इबसान नामक व्यक्ति हुआ। इबसान बेतलेहेम
नगर का निवासी था। 9इबसान के तीस पुत्र और तीस
पुत्रियाँ थीं। उसने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के साथ
विवाह करने दिया, जो उसके रिश्तेदार नहीं थे। वह
ऐसी तीस स्त्रियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में
लाया जो उसकी रिश्तेदार नहीं थीं। इबसान इस्राएल के
लोगों का न्यायाधीश सात वर्ष तक रहा। 10तब इबसान
मर गया। वह बेतलेहेम नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश एलोन

11इबसान के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश एलोन नामक व्यक्ति हुआ। एलोन जबूलून
के परिवार समूह से था। वह इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश दस वर्ष तक रहा। 12तब जबूलून के परिवार
समूह का व्यक्ति एलोन मर गया। वह जबूलून के प्रदेश
में अय्यालोन नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश अब्दोन

13एलोन के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश अब्दोन नामक व्यक्ति हुआ। अब्दोन हिल्लेल
नामक व्यक्ति का पुत्र था। अब्दोन पिरातोन नगर का
निवासी था। 14अब्दोन के चालीस पुत्र और तीस पौत्र
थे। वे सत्तर गधों पर सवार होते थे। अब्दोन इस्राएल के
लोगों का न्यायाधीश आठ वर्ष तक रहा। 15तब हिल्लेल
का पुत्र अब्दोन मर गया। वह पिरातोन नगर में दफनाया
गया। पिरातोन एप्रैम प्रदेश में है। यह वह पहाड़ी प्रदेश है
जहाँ अमालेकी लोग रहते हैं।

शिमशोन का जन्म

13 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते
हुए देखा। इसलिए यहोवा ने पलिश्ती लोगों को
उन पर चालीस वर्ष तक शासन करने दिया।

2एक व्यक्ति सोरा नगर का निवासी था। उस व्यक्ति
का नाम मानोह था। वह दान के परिवार समूह से था।
मानोह की एक पत्नी थी। किन्तु वह कोई सन्तान
उत्पन्न नहीं कर सकती थी। 3यहोवा का दूत मानोह
की पत्नी के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा, "तुम
सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हो। किन्तु तुम गर्भवती
होगी और तुम्हें एक पुत्र होगा। 4तुम दाखमधु या कोई
नशीली पीने की चीज न पीओ। किसी भी अशुद्ध जानवर
को न खाओ। 5क्यों? क्योंकि तुम सचमुच गर्भवती होगी
और तुम्हें एक पुत्र होगा। वह विशेष रूप से परमेश्वर
के प्रति एक विशेष रूप में समर्पित होगा। वह एक
नाज़ीर होगा। इसलिये तुम्हें उसके बाल कभी नहीं काटने
चाहिये। वह पैदा होने से पहले परमेश्वर का व्यक्ति
होगा। वह इस्राएल के लोगों को पलिश्ती लोगों की शक्ति
से मुक्त करायेगा।"

6तब वह स्त्री अपने पति के पास गई और जो कुछ
हुआ था, बताया। उसने कहा, "परमेश्वर के पास से
एक व्यक्ति मेरे पास आया। वह परमेश्वर के दूत की
तरह ज्ञात होता था। वह बहुत भयानक दिखाई पड़ता
था और मैं डर गई थी। मैंने उससे यह नहीं पूछा कि,
तुम कहाँ से आये हो। उसने मुझे अपना नाम नहीं

बताया। 7किन्तु उसने मुझसे कहा, 'तुम गर्भवती हो और तुम्हें एक पुत्र होगा। कोई दाखमधु या नशीली पीने की चीज़ मत पीओ। कोई ऐसा जानवर न खाओ जो अशुद्ध हो, क्योंकि वह लड़का विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित होगा। वह लड़का जन्म के पहले से लेकर मरने के दिन तक परमेश्वर का विशेष व्यक्ति होगा।'"

8तब मानोह ने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू परमेश्वर के व्यक्ति को हम लोगों के पास फिर भेज। हम चाहते हैं कि वह हमें सिखाए कि हम लोगों के यहाँ जन्म लेने वाले बच्चे के साथ हमें क्या करना चाहिए।"

9परमेश्वर ने मानोह की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर का दूत फिर उस स्त्री के पास, तब आया जब वह खेत में बैठी थी। किन्तु उसका पति मानोह उसके साथ नहीं था। 10इसलिये वह स्त्री अपने पति से यह कहने के लिये दौड़ी, "वह व्यक्ति लौटा है। पिछले दिन जो व्यक्ति मेरे पास आया था, वह यहाँ है।"

11मानोह उठा और अपनी पत्नी के पीछे चला। जब वह उस व्यक्ति के पास पहुँचा तो उसने कहा, "क्या तुम वही व्यक्ति हो जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?" दूत ने कहा, "मैं ही हूँ।" 12अत: मानोह ने कहा, "मुझे आशा है कि जो तुम कहते हो वह होगा। यह बताओ कि वह लड़का कैसा जीवन बिताएगा? वह क्या करेगा?"

13यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "तुम्हारी पत्नी को वह सब करना चाहिए, जो मैंने उसे करने को कहा है। 14उसे अंगूर की बेल पर उगी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उसे दाखमधु या कोई नशीली पीने की चीज़ नहीं पीनी चाहिए। उसे किसी ऐसे जानवर को नहीं खाना चाहिए जो अशुद्ध हो। उसे वह सब करना चाहिये, जो करने का आदेश मैंने उसे दिया है।"

15तब मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, "हम यह चाहते हैं कि तुम थोड़ी देर और रुको। हम लोग तुम्हारे भोजन के लिये नया बकरा पकाना चाहते हैं।" 16तब यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "यदि तुम यहाँ से जाने से मुझे रोकोगे तो भी मैं तुम्हारा भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। किन्तु यदि तुम कुछ तैयार करना चाहते हो तो यहोवा को होमबलि दो।" (मानोह ने नहीं समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था।) 17तब मानोह ने यहोवा के दूत से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है? हम लोग इसलिये जानना चाहते हैं कि हम तुम्हारा सम्मान तब कर सकेंगे, जब वह सचमुच होगा जो तुम कह रहे हो।"

18यहोवा के दूत ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो? यह इतना आश्चर्यजनक है कि तुम विश्वास नहीं कर सकते।" *

19तब मानोह ने चट्टान पर एक बकरे की बलि दी। उसने यहोवा तथा उस व्यक्ति को, कुछ अन्न भी भेंट के रूप में दिया, जो अद्भुत चीज़ें करता है। 20मानोह और उसकी पत्नी उसे ध्यान से देख रहे थे, जो हो रहा था। जैसे ही लपटें वेदी से आकाश तक उठीं, वैसे ही यहोवा का दूत अग्नि में आकाश को चला गया। जब मानोह और उसकी पत्नी ने यह देखा तो वे धरती पर गिर गए। उन्होंने अपने सिर को धरती से लगाया। 21मानोह अन्त में समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था। यहोवा का दूत फिर मानोह के सामने प्रकट नहीं हुआ। 22मानोह ने कहा, "हम लोगों ने परमेश्वर को देखा है। निश्चय ही इस कारण से हम लोग मरेंगे।"

23लेकिन उसकी पत्नी ने उससे कहा, "यहोवा हम लोगों को मारना नहीं चाहता। यदि यहोवा हम लोगों को मारना चाहता तो वह हम लोगों की होमबलि और अन्नबलि स्वीकार न करता। उसने हम लोगों को वह सब न दिखाया होता, और वह हम लोगों से ये बातें न कहा होता।" 24अत: स्त्री को एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम शिमशोन रखा। शिमशोन बड़ा हुआ और यहोवा ने उसे आशीर्वाद दिया। 25यहोवा का तेज शिमशोन में तभी कार्यशील हो गया जब वह महनेदान नगर में था। वह नगर सोरा और एशताओल नगरों के मध्य है।

शिमशोन का विवाह

14 शिमशोन तिम्ना नगर को गया। उसने वहाँ एक पलिश्ती युवती को देखा। 2जब वह वापस लौटा तो उसने अपने माता–पिता से कहा, "मैंने एक पलिश्ती लड़की को तिम्ना में देखा है। मैं चाहता हूँ तुम उसे मेरे लिये लाओ। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

3उसके पिता और माता ने उत्तर दिया, "किन्तु इस्राएल के लोगों में से एक लड़की है जिससे तुम विवाह कर सकते हो। क्या तुम पलिश्ती लोगों में से एक लड़की से विवाह करोगे? उन लोगों का खतना भी नहीं होता।"

किन्तु शिमशोन ने कहा, "मेरे लिये वही लड़की लाओ। मैं उसे ही चाहता हूँ।" 4(शिमशोन के माता–पिता नहीं समझते थे कि यहोवा ऐसा ही होने देना चाहता है। यहोवा कोई रास्ता ढूँढ रहा था, जिससे वह पलिश्ती लोगों के विरुद्ध कुछ कर सके। उस समय पलिश्ती लोग इस्राएल के लोगों पर शासन कर रहे थे।)

5शिमशोन अपने माता–पिता के साथ तिम्ना नगर को गया। वे नगर के निकट अंगूर के खेतों तक गए। उस स्थान पर एक जवान सिंह गरज उठा और शिमशोन पर कूदा। 6यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन पर उतरी। उसने अपने खाली हाथों से ही सिंह को चीर डाला। यह उसके लिये सरल मालूम हुआ। यह वैसा

यह इतना ... कर सकते या "यह पेलेई है। जिसका अर्थ आश्चर्यजनक और अद्भुत है।" यह नाम यशा 9:6 में अद्भुत युक्ति करने वाले की तरह हैं।

सरल हुआ जैसा एक बकरी के बच्चे को चीरना। किन्तु शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि उसने क्या किया है।

7इसलिए शिमशोन नगर में गया और उसने पलिश्ती लड़की से बातें की। उसने उसे प्रसन्न किया। 8कई दिन बाद शिमशोन उस पलिश्ती लड़की के साथ विवाह करने के लिये वापस आया। आते समय रास्ते में वह मरे सिंह को देखने गया। उसने मरे सिंह के शरीर में मधुमक्खियों का एक छत्ता पाया। उन्होंने कुछ शहद तैयार कर लिया था। 9शिमशोन ने अपने हाथ से कुछ शहद निकाला। वह शहद चाटता हुआ रास्ते पर चल पड़ा। जब वह अपने माता–पिता के पास आया तो उसने उन्हें कुछ शहद दिया। उन्होंने भी उसे खाया किन्तु शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि उसने मरे सिंह के शरीर से शहद लिया है।

10शिमशोन का पिता पलिश्ती लड़की को देखने गया। दूल्हे के लिये यह रिवाज था कि उसे एक दावत देनी होती थी। इसलिए शिमशोन ने दावत दी। 11जब लोगों ने देखा कि वह एक दावत दे रहा है तो उन्होंने उसके साथ तीस व्यक्ति भेजे।

12तब शिमशोन ने उन तीस व्यक्तियों से कहा, "मैं तुम्हें एक पहेली सुनाना चाहता हूँ। यह दावत सात दिन तक चलेगी। उस समय उत्तर ढूँढने की कोशिश करना। यदि तुम पहेली का उत्तर उस समय के अन्दर दे सके तो मैं तुम्हें तीस सूती कमीजें, तीस वस्त्रों के जोड़े दूँगा। 13किन्तु यदि तुम इसका उत्तर न निकाल सके तो तुम्हें तीस सूती कमीजें और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देने होंगे।" अत: तीस व्यक्तियों ने कहा, "पहले अपनी पहेली सुनाओ, हम इसे सुनना चाहते हैं।"

> 14शिमशोन ने यह पहेली सुनाई: खाने वाले में से
> खाद्य वस्तु। और शक्तिशाली में से मधुर वस्तु
> निकली।

अत: तीस व्यक्तियों ने तीन दिन तक इसका उत्तर ढूँढने का प्रयत्न किया, किन्तु वे कोई उत्तर न पा सके।

15चौथे दिन* वे व्यक्ति शिमशोन की पत्नी के पास आए। उन्होंने कहा, "क्या तुमने हमें गरीब बनाने के लिये यहाँ बुलाया है? तुम अपने पति को, हम लोगों को पहेली का उत्तर देने के लिये फुसलाओ। यदि तुम हम लोगों के लिये उत्तर नहीं निकालती तो हम लोग तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर में रहने वाले सभी लोगों को जला देंगे।"

16इसलिए शिमशोन की पत्नी उसके पास गई और रोने–चिल्लाने लगी। उसने कहा, "तुम मुझसे घृणा करते हो। तुम मुझसे सच्चा प्रेम नहीं करते हो। तुमने मेरे लोगों को एक पहेली सुनाई है और तुम उसका उत्तर मुझे नहीं बता सकते।"

17शिमशोन की पत्नी दावत के शेष सात दिन तक रोती चिल्लाती रही। अत: अन्त में उसने सातवें दिन पहेली का उत्तर उसे दे दिया। उसने बता दिया क्योंकि वह उसे बराबर परेशान कर रही थी। तब वह अपने लोगों के बीच गई और उन्हें पहेली का उत्तर दे दिया।

18इस प्रकार दावत वाले सातवें दिन सूरज के डूबने से पहले पलिश्ती लोगों के पास पहेली का उत्तर था। वे शिमशोन के पास आए और उन्होंने कहा,

> "शहद से मीठा क्या है? सिंह से अधिक शक्तिशाली
> कौन है?" तब शिमशोन ने उनसे कहा, "यदि तुम
> ने मेरी गाय को न जोता होता तो, मेरी पहेली का
> हल नहीं निकाल पाए होते!"

19शिमशोन बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा की आत्मा उसके ऊपर बड़ी शक्ति के साथ आई। वह आश्कलोन नगर को गया। उस नगर में उसने उनके तीस व्यक्तियों को मारा। तब उसने सारे वस्त्र और शवों से सारी सम्पत्ति ली। वह उन वस्त्रों को लेकर लौटा और उन व्यक्तियों को दिया, जिन्होंने पहेली का उत्तर दिया था। तब वह अपने पिता के घर लौटा। 20शिमशोन अपनी पत्नी को नहीं ले गया। विवाह समारोह में उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति ने उसे रख लिया।

शिमशोन पलिश्तियों के लिये विपत्ति उत्पन्न करता है

15 गेहूँ की फसल तैयार होने के समय शिमशोन अपनी पत्नी से मिलने गया। वह अपने साथ एक जवान बकरा ले गया। उसने कहा, "मैं अपनी पत्नी के कमरे में जा रहा हूँ।" किन्तु उसका पिता उसे अन्दर जाने देना नहीं चाहता था। 2उसके पिता ने शिमशोन से कहा, "मैंने सोचा कि तुम सचमुच अपनी पत्नी से घृणा करते हो अत: विवाह में सम्मिलित सबसे अच्छे व्यक्ति को मैंने उसे पत्नी के रूप में दे दिया। उसकी छोटी बहन उससे अधिक सुन्दर है। उसकी छोटी बहन को ले लो।"

3किन्तु शिमशोन ने उससे कहा, "तुम पलिश्ती लोगों पर प्रहार करने का मेरे पास अब उचित कारण है। अब कोई मुझे दोषी नहीं बताएगा।"

4इसलिए शिमशोन बाहर निकला और तीन सौ लोमड़ियों को पकड़ा। उसने दो लोमड़ियों को एक बार एक साथ लिया और उनका जोड़ा बनाने के लिये उनकी पूँछ एक साथ बांध दी। तब उसने लोमड़ियों के हर जोड़ों की पूँछो के बीच एक–एक मशाल बाँधी। 5शिमशोन ने लोमड़ियों की पूँछ के बीच के मशालों को जलाया। तब उसने पलिश्ती लोगों के खेतों में लोमड़ियों

चौथे दिन यह ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू पाठ कहता है "सातवें दिन।"

को छोड़ दिया। इस प्रकार उसने उनकी खड़ी फसलों और उनकी कटी ढेरों को जला दिया। उसने उनके अंगूर के खेतों और जैतून के पेड़ों को भी जला डाला।

6पलिश्ती लोगों ने पूछा, "यह किसने किया?" किसी ने उनसे कहा, "तिम्ना के व्यक्ति के दामाद शिमशोन ने यह किया है। उसने यह इसलिए किया कि उसके ससुर ने शिमशोन की पत्नी को उसके विवाह के समय उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति को दे दी।" अत: पलिश्ती लोगों ने शिमशोन की पत्नी और उसके ससुर को जलाकर मार डाला।

7तब शिमशोन ने पलिश्ती के लोगों से कहा, "तुम लोगों ने यह बुरा किया अत: मैं तुम लोगों पर भी प्रहार करूँगा। मैं तब तक तुम लोगों पर विपत्ति ढाता रहूँगा जब तक मैं विपत्ति ढा सकूँगा।"

8तब शिमशोन ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण किया। उसने उनमें से बहुतों को मार डाला। तब वह गया और एक गुफा में ठहरा। वह गुफा 'एताम की चट्टान' नामक स्थान पर थी।

9तब पलिश्ती लोग यहूदा के प्रदेश में गये। वे लही नामक स्थान पर रुके। उनकी सेना ने वहाँ डेरा डाला और युद्ध के लिये तैयारी की। 10यहूदा परिवार समूह के लोगों ने उनसे पूछा, "तुम पलिश्तियों, हम लोगों से युद्ध करने क्यों आए हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग शिमशोन को पकड़ने आए हैं। हम लोग उसे अपना बन्दी बनाना चाहते हैं। हम लोग उसे उसका बदला चुकाना चाहते हैं जो उसने हमारे लोगों के साथ किया है।"

11तब यहूदा के परिवार समूह के तीन हजार व्यक्ति शिमशोन के पास गये। वे एताम की चट्टान की गुफा में गए। उन्होंने उससे कहा, "तुमने हम लोगों के लिए क्या विपत्ती खड़ी कर दी है? क्या तुम्हें पता नहीं है कि पलिश्ती लोग वे लोग हैं जो हम पर शासन करते हैं?" शिमशोन ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे साथ जो किया उसका मैंने केवल बदला दिया।"

12तब उन्होंने शिमशोन से कहा, "हम तुम्हें बन्दी बनाने आए हैं। हम लोग तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे।"

शिमशोन ने यहूदा के लोगों से कहा, "प्रतिज्ञा करो कि तुम लोग स्वयं मुझ पर प्रहार नहीं करोगे।"

13तब यहूदा के व्यक्तियों ने कहा, "हम स्वीकार करते हैं। हम लोग केवल तुमको बांधेंगे और तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम तुमको जान से नहीं मारेंगे।" अत: उन्होंने शिमशोन को दो नयी रस्सियों से बांधा। वे उसे चट्टान की गुफा से बाहर ले गए।

14जब शिमशोन लही नामक स्थान पर पहुँचा तो पलिश्ती लोग उससे मिलने आए। वे प्रसन्नता से शोर मचा रहे थे। तब यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन में आई। उसके ऊपर की रस्सियाँ ऐसी कमजोर हो गई जैसे मानो वे जल गई हों। रस्सियाँ उसके हाथों से ऐसे गिरीं मानों वे गल गई हो। 15शिमशोन को उस गधे के जबड़े की हड्डी मिली जो मरा पड़ा था। उसने जबड़े की हड्डी ली और उससे एक हजार पलिश्ती लोगों को मार डाला।

16तब शिमशोन ने कहा,

एक गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने ढेर किया है
उनका– एक बहुत ऊँचा ढेर। एक गधे के जबड़े
की हड्डी से मैंने मार डाला है हजार व्यक्तियों को!

17जब शिमशोन ने बोलना समाप्त किया तब उसने जबड़े की हड्डी को फेंक दिया। इसलिए उस स्थान का नाम रामत लही पड़ा।

18 शिमशोन को बहुत प्यास लगी थी। इसलिए उसने यहोवा को पुकारा। उसने कहा, "मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मुझे यह बड़ी विजय दी है। क्या अब मुझे प्यास से मरना पड़ेगा? क्या मुझे उनसे पकड़ा जाना होगा जिनका खतना नहीं हुआ है?"

19लही में भूमि के अन्दर एक गड्ढा है। परमेश्वर ने उस गड्ढे को फट जाने दिया और पानी बाहर आ गया। शिमशोन ने पानी पीया और अपने को स्वस्थ अनुभव किया। उसने फिर अपने को शक्तिशाली अनुभव किया। इसलिए उसने उस पानी के सोते का नाम एनहक्कोरे रखा। यह अब तक आज भी लही नगर में है।

20इस प्रकार शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा। वह पलिश्ती लोगों के समय में था।

शिमशोन अज्जा नगर को जाता है

16 एक दिन शिमशोन अज्जा नगर को गया। उसने वहाँ एक वेश्या को देखा। वह उसके साथ रात बिताने के लिये अन्दर गया। 2किसी ने अज्जा के लोगों से कहा, "शिमशोन यहाँ आया है।" वे उसे जान से मार डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नगर को घेर लिया। वे छिपे रहे और वे नगर–द्वार के पास छिप गये और सारी रात शिमशोन की प्रतीक्षा किया। वे पूरी रात एकदम चुप रहे। उन्होंने आपस में कहा, "जब सवेरा होगा, हम लोग शिमशोन को मार डालेंगे।"

3किन्तु शिमशोन वेश्या के साथ आधी रात तक ही रहा। शिमशोन आधी रात में उठा और नगर के फाटक के किवाड़ों को पकड़ लिया और उसने उन्हें खींच कर दीवार से अलग कर दिया। शिमशोन ने किवाड़ों, दो खड़ी चौखटों और अबेड़ों को जो किवाड़ को बन्द करती थी, पकड़ कर अलग उखाड़ लिया। तब शिमशोन ने उन्हें अपने कंधों पर लिया और उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हेब्रोन नगर के समीप है।

शिमशोन और दलीला

4इसके बाद शिमशोन दलीला नामक एक स्त्री से प्रेम करने लगा। वह सोरेक घाटी की थी।

5पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास गए। उन्होंने कहा, "हम जानना चाहते हैं कि शिमशोन उतना अधिक शक्तिशाली कैसे है? उसे फुसलाने की कोशिश करो कि वह अपनी गुप्त बात बता दे। तब हम लोग जान जाएंगे कि उसे कैसे पकड़ें और उसे कैसे बांधें। तब हम लोग उस पर नियन्त्रण कर सकते हैं। यदि तुम ऐसा करोगी तो हम में से हर एक तुमको एक हजार एक सौ शेकेल* देगा।"

6अत: दलीला ने शिमशोन से कहा, "मुझे बताओ कि तुम इतने अधिक शक्तिशाली क्यों हो? तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है और तुम्हें कैसे असहाय कर सकता है?"

7शिमशोन ने उत्तर दिया, "कोई व्यक्ति मुझे सात नयी धनुष की उन डोरियों से बांध सकता है जो अब तक सूखी न हो। यदि कोई ऐसा करेगा तो मैं अन्य आदमियों की तरह दुर्बल हो जाऊँगा।"

8तब पलिश्ती के शासक सात नयी धनुष की डोरियाँ दलीला के लिये लाए। वे डोरियाँ अब तक सूखी नहीं थीं। उसने शिमशोन को उससे बांध दिया। 9कुछ व्यक्ति दूसरे कमरे में छिपे थे। दलीला ने शिमशोन से कहा, "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु शिमशोन ने धनुष–डोरियों को सरलता से तोड़ दिया। वे दीपक से जली ताँत की राख की तरह टूट गई। इस प्रकार पलिश्ती के लोग शिमशोन की शक्ति का राज न पा सके।

10तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। कृपया मुझे सच–सच बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।"

11शिमशोन ने कहा, "कोई व्यक्ति मुझे नयी रस्सियों से बांध सकता है। वे मुझे उन रस्सियों से बांध सकते हैं जिनका उपयोग पहले न हुआ हो। यदि कोई ऐसा केरगा तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

12इसलिये दलीला ने कुछ नयी रस्सियाँ ली और शिमशोन को बांध दिया। कुछ व्यक्ति अगले कमरे में छिपे थे। तब दलीला ने उसे आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु उसने रस्सियों को सरलता से तोड़ दिया। उसने उन्हें धागे की तरह तोड़ डाला।

13तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।" उसने कहा, "यदि तुम उस करघे का उपयोग करो। जो मेरे सिर के बालों के बटों को एक में बनाए और इसे एक काँटे से कस दे तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।" तब शिमशोन सोने चला गया। इसलिए दलीला ने करघे का उपयोग उसके सिर के बालों के सात बट बुनने के लिये किया।

14तब दलीला ने जमीन में खेमे की खूँटी गाड़कर, करघे को उससे बांध दिया। फिर उसने शिमशोन को आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने जा रहे हैं।" शिमशोन ने खेमे की खूँटी करघा तथा ढरकी को उखाड़ दिया। 15तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुम मुझसे कैसे कह सकते हो, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ,' जबकि तुम मुझ पर विश्वास तक नहीं करते।* तुम अपना राज बताने से इन्कार करते हो। यह तीसरी बार तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने अपनी भीषण शक्ति का राज नहीं बताया है।" 16वह शिमशोन को दिन पर दिन परेशान करती गई। उसके राज के बारे में उसके पूछने से वह इतना थक गया कि उसे लगा कि वह मरने जा रहा है। 17इसलिये उसने दलीला को सब कुछ बता दिया। उसने कहा, "मैंने अपने बाल कभी कटवाये नहीं हैं। मैं जन्म के पहले विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित था। यदि कोई मेरे बालों को काट दे तो मेरी शक्ति चली जाएगी। मैं वैसा ही कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

18दलीला ने देखा कि शिमशोन ने अपने हृदय की सारी बात कह दी है। उसने पलिश्ती के लोगों के शासकों के पास दूत भेजा। उसने कहा, "फिर वापस लौटो। शिमशोन ने सब कुछ कह दिया है।" अत: पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास लौटे। वे वह धन साथ लाए जो उन्होंने उसे देने की प्रतिज्ञा की थी ।

19दलीला ने शिमशोन को उस समय सो जाने दिया, जब वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा था। तब उसने एक व्यक्ति को अन्दर बुलाया और शिमशोन के बालों की सात लटों को कटवा दिया। इस प्रकार उसने उसे शक्तिहीन बना दिया। शिमशोन की शक्ति ने उसे छोड़ दिया। 20तब दलीला ने उसे आवाज दी। "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुमको पकड़ने जा रहे हैं।" वह जाग पड़ा और सोचा, "मैं पहले की तरह भाग निकलूँ और अपने को स्वतन्त्र रखूँ।" किन्तु शिमशोन को यह नहीं मालूम था कि यहोवा ने उसे छोड़ दिया है।

21पलिश्ती के लोगों ने शिमशोन को पकड़ लिया। उन्होंने उसकी आँखे निकाल लीं और उसे अज्जा नगर को ले गए। तब उसे भागने से रोकने के लिए उसके

एक हजार एक सौ शेकेल लगभग तेरह किलो चाँदी के बराबर होता है।

तुम ... करते "तुम्हारा हृदय मेरे साथ नहीं है।"

पैरों में उन्होंने बेड़ियाँ डाल दीं। उन्होंने उसे बन्दीगृह में डाल दिया तथा उससे चक्की चलवायी। 22किन्तु शिमशोन के बाल फिर बढ़ने आरम्भ हो गए।

23पलिश्ती लोगों के शासक उत्सवमनाने के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हुए। वे अपने देवता दागोन को एक बड़ी भेंट चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने कहा, "हम लोगों के देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हराने में सहायता की है।"

24जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन को देखा तब उन्होंने अपने देवता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा,

"इस व्यक्ति ने हमारे लोगों को नष्ट किया! इस व्यक्ति ने हमारे अनेक लोगों को मारा! किन्तु हमारे देवता ने हमारे शत्रु को पकड़वाने में हमारी मदद की!"

25लोग उत्सव में खुशी मना रहे थे। इसलिए उन्होंने कहा, "शिमशोन को बाहर लाओ। हम उसका मजाक उड़ाना चाहते हैं।" इसलिए वे शिमशोन को बन्दीगृह से बाहर ले आए और उसका मजाक उड़ाया। उन्होंने शिमशोन को दागोन देवता के मन्दिर के स्तम्भों के बीच खड़ा किया। 26एक नौकर शिमशोन का हाथ पकड़ा हुआ था। शिमशोन ने उससे कहा, "मुझें वहाँ रखो जहाँ मैं उन स्तम्भों को छू सकूँ, जो इस मन्दिर को ऊपर रोके हुए है। मैं उनका सहारा लेना चाहता हूँ।"

27मन्दिर में स्त्री–पुरूषों की अपार भीड़ थी। पलिश्ती लोगों के सभी शासक वहाँ थे। वहाँ लगभग तीन हजार स्त्री–पुरूष मन्दिर की छत पर थे। वे हँस रहे थे और शिमशोन का मजाक उड़ा रहे थे। 28तब शिमशोन ने यहोवा से प्रार्थना की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान यहोवा, मुझे याद कर। परमेश्वर मुझे कृपाकर केवल एक बार और शक्ति दे। मुझे केवल एक यह काम करने दे कि पलिश्तियों को अपनी आँखों के निकालने का बदला चुका दूँ।" 29तब शिमशोन ने मन्दिर के केन्द्र के दोनों स्तम्भों को पकड़ा। ये दोनों स्तम्भ पूरे मन्दिर को टिकाए हुए थे। उसने दोनों स्तम्भों के बीच में अपने को जमाया। एक स्तम्भ उसकी दांयी ओर तथा दूसरा उसकी बाँयी ओर था। 30शिमशोन ने कहा, "इन पलिश्तयों के साथ मुझें मरने दे।" तब उसने अपनी पूरी शक्ति से स्तम्भों को ठेला और मन्दिर शासकों तथा इनमें आए लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिमशोन ने अपने जीवन काल में जितने पलिश्ती लोगों को मारा, उससे कहीं अधिक लोगों को उसने तब मारा, जब वह मरा।

31शिमशोन के भाईयों और उसके पिता का पूरा परिवार उसके शरीर को लेने गए। वे उसे वापस लाए और उसे उसके पिता मानोह के कब्र में दफनाया। यह कब्र सोरा और एश्ताओल नगरों के बीच है। शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा।

मीका की मूर्तियाँ

17 मीका नामक एक व्यक्ति था जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रहता था। 2मीका ने अपनी माँ से कहा, "क्या तुम्हें चाँदी के ग्यारह सौ सिक्के याद हैं जो तुमसे चुरा लिये गए थे। मैंने तुम्हें उसके बारे में शाप देते सुना। वह चाँदी मेरे पास हैं। मैंने उसे लिया है।" उसकी माँ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम्हें यहोवा आशीर्वाद दे।"

3मीका ने अपनी माँ को ग्यारह सौ सिक्के वापस दिये। तब उसने कहा, "मैं ये सिक्के यहोवा को एक विशेष भेंट के रूप में दूँगी। मैं यह चाँदी अपने पुत्र को दूँगी और वह एक मूर्ति बनाएगा और उसे चाँदी से ढक देगा। इसलिए पुत्र, अब यह चाँदी मैं तुम्हें लौटाती हूँ।"

4लेकिन मीका ने वह चाँदी अपनी माँ को लौटा दी। अत: उसने दो सौ शेकेल चाँदी लिये और एक सुनार को दे दिया। सुनार ने चाँदी का उपयोग चाँदी से ढकी एक मूर्ति बनाने में किया। मूर्ति मीका के घर में रखी गई। 5मीका का एक मन्दिर मूर्तियों की पूजा के लिये था। उसने एक एपोद और कुछ घरेलू मूर्तियाँ बनाई। तब मीका ने अपने पुत्रों में से एक को अपना याजक चुना। 6(उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। इसलिए हर एक व्यक्ति वह करता था जो उसे ठीक जँचता था।)

7एक लेवीवंशी युवक था। वह यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम नगर का निवासी था। वह यहूदा के परिवार समूह में रह रहा था। 8उस युवक ने यहूदा में बेतलेहेम को छोड़ दिया। वह रहने के लिये दूसरी जगह ढूँढ रहा था। जब वह यात्रा कर रहा था, वह मीका के घर आया। मीका का घर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। 9मीका ने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" युवक ने उत्तर दिया, "मैं उस बतेलेहम नगर का लेवीवंशी हूँ जो यहूदा प्रदेश में है। मैं रहने के लिये स्थान ढूँढ रहा हूँ।"

10तब मीका ने उससे कहा, "मेरे साथ रहो। मेरे पिता और मेरे याजक बनो। मैं हर वर्ष तुम्हें दस चाँदी के सिक्के दूँगा। मैं तुम्हें वस्त्र और भोजन भी दूँगा।" लेवीवंशी ने वह किया जो मीका ने कहा। 11लेवीवंशी युवक मीका के साथ रहने को तैयार हो गया। युवक मीका के पुत्रों के जैसा हो गया। 12मीका ने युवक को अपना याजक बनाया। इस प्रकार युवक याजक बन गया और मीका के घर में रहने लगा। 13मीका ने कहा, "अब मैं समझता हूँ कि यहोवा मेरे प्रति अच्छा होगा। मैं यह इसलिए जानता हूँ कि मैंने लेवीवंशी के परिवार के एक व्यक्ति को याजक रखा है।"

दान लैश नगर पर अधिकार करता है

18 उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था और उस समय दान का परिवार समूह,

अपना कहे जाने योग्य रहने के लिये, भूमि की खोज में था। इस्राएल के अन्य परिवार समूहों ने पहले ही अपनी भूमि प्राप्त कर ली थी। किन्तु दान का परिवार समूह अभी अपनी भूमि नहीं पा सका था।

2इसलिए दान के परिवार समूह ने पाँच सैनिकों को कुछ भूमि खोजने के लिये भेजा। वे रहने के लिये अच्छा स्थान खोजने गए। वे पाँचों व्यक्ति जोरा और एश्ताओल नगरों के थे। वे इसलिए चुने गए थे कि वे दान के सभी परिवार समूह में से थे। उनसे कहा गया था, "जाओ और किसी भूमि की खोज करो।" पाँचों व्यक्ति एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में आए। वे मीका के घर आए और वहीं रात बिताई।

3"जब पाँचों व्यक्ति मीका के घर के समीप आए तो उन्होंने लेवीवंश के परिवार समूह के युवक की आवाज सुनी। उन्होंने उसकी आवाज पहचानी, इसीलिये वे मीका के घर ठहर गए। उन्होंने लेवीवंशी युवक से पूछा, "तुम्हें इस स्थान पर कौन लाया है? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा यहाँ क्या काम है?"

4उसने उनसे कहा, "मीका ने मेरी नियुक्ति की है। मैं उसका याजक हूँ।"

5उन्होंने उससे कहा, "कृपया परमेश्वर से हम लोगों के लिये कुछ मांगो हम लोग कुछ जानना चाहते हैं। क्या हमारे रहने के लिये भूमि की खोज सफल होगी?"

6याजक ने पाँचों व्यक्तियों से कहा, "शान्ति से जाओ। यहोवा तुम्हारा मार्ग–दर्शन करेगा।"

7 इसलिये पाँचों व्यक्ति वहाँ से चले। वे लैश नगर को आए। उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग सुरक्षित* रहते हैं। उन पर सीदोन के लोगों का शासन था। सीदोन भूमध्यसागर के तट पर एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली नगर था। वे शान्ति और सुरक्षा के साथ रहते थे। लोगों के पास हर एक चीज़ बहुत अधिक थी और उन पर प्रहार करनेवाला पास में कोई शत्रु नहीं था और वे सीदोन नगर के लोगों से बहुत अधिक दूर रहते थे और अराम के लोगों से भी उनका कोई व्यापार नहीं था।* 8पाँचों व्यक्ति सोरा और एश्ताओल नगर को वापस लौटे। उनके सम्बन्धियों ने पूछा, "तुमने क्या पता लगाया?"

9पाँचों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने प्रदेश देखा है और वह बहुत अच्छा है। हमें उन पर आक्रमण करना चाहिये। प्रतीक्षा न करो। हम चलें और उस प्रदेश को ले लें। 10जब तुम उस प्रेदश मे चलोगे तो देखोगे कि वहाँ पर बहुत अधिक भूमि है। वहाँ सब कुछ बहुत अधिक है। तुम यह भी पाओगे कि वहाँ के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं है। निश्चय ही परमेश्वर ने वह प्रदेश हमको दिया है।"

11इसलिए दान के परिवार समूह के छ: सौ व्यक्तियों ने सोरा और एश्ताओल के नगरों को छोड़ा। वे युद्ध के लिये तैयार थे। 12लैश नगर की यात्रा करते समय वे यहूदा प्रदेश में किर्य्यत्यारीम नगर में रूके। उन्होंने वहाँ डेरा डाला। यही कारण है किर्य्यत्यारीम के पश्चिम का प्रदेश आज तक महनेदान कहा जाता है। 13उस स्थान से छ: सौ व्यक्तियों ने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की। वे मीका के घर आए।

14तब उन पाँचों व्यक्तियों ने जिन्होंने लैश की खोज की थी, अपने भाइयों से कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि इन घरों में से एक में एपोद, अन्य घरेलू देवता, एक खुदाईवाली मूर्ति तथा एक ढाली गई मूर्ति है? अब तुम समझते हो कि तुम्हें क्या करना है। जाओ और उन्हें ले आओ।" 15इसलिये वे मीका के घर रूके जहाँ लेवीवंशी युवक रहता था। उन्होंने युवक से पूछा कि वह प्रसन्न है। 16दान के परिवार समूह के छ: सौ लोग फाटक के द्वार पर खड़े रहे। उनके पास सभी हथियार थे तथा वे युद्ध के लिये तैयार थे। 17–18पाँचों गुप्तचर घर में गए। उन्होंने खुदाई वाली मूर्ति, एपोद, घरेलू मूर्तियों और ढाली गई मूर्ति को लिया। जब वे ऐसा कर रहे थे तब लेवीवंशी युवक याजक और युद्ध के लिये तैयार छ: सौ व्यक्ति फाटक के द्वार के साथ खड़े थे। लवीवंशी युवक याजक ने उनसे पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?"

19पाँचों व्यक्तियों ने कहा, "चुप रहो, एक शब्द भी न बोलो। हम लोगों के साथ चलो। हमारे पिता और याजक बनो। तुम्हें स्वयं चुनना चाहिये कि तुम किसे अधिक अच्छा समझते हो? क्या यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है कि तुम एक व्यक्ति के याजक रहो? या उससे कहीं अधिक अच्छा यह है कि तुम इस्राएल के लोगों के एक पूरे परिवार समूह के याजक बनो?"

20इससे लेवीवंशी प्रसन्न हुआ। इसलिये उसने एपोद, घरेलू मूर्तियों तथा खुदाई वाली मूर्ति को लिया। वह दान के परिवार समूह के उन लोगों के साथ गया।

21तब दान परिवार समूह के छ: सौ व्यक्ति लेवीवंशी के साथ मुड़े और उन्होंने मीका के घर को छोड़ा। उन्होंने अपने छोटे बच्चों, जानवरों और अपनी सभी चीज़ों को अपने सामने रखा।

22दान के परिवार समूह के लोग उस स्थान से बुहत दूर गए और तब मीका के पास रहने वाले लोग चिल्लाने लगे। तब उन्होंने दान के लोगों का पीछा किया और उन्हें जा पकड़ा। 23मीका के लोग दान के लोगों पर बरस पड़ रहे थे। दान के लोग मुड़े। उन्होंने मीका से कहा, "समस्या क्या है? तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

24मीका ने उत्तर दिया, "दान के तुम लोग, तुमने मेरी मूर्तियाँ ली है। मैंने उन मूर्तियों को अपने लिये बनाया

सुरक्षित सीदोन लोगों की तरह "सुरक्षा।" "वे सीदोन के तौर–तरीके पर चलते थे।"

अराम ... था प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार । हिब्रू पाठ में "वे कहीं के लोगों से व्यापार सम्बन्ध नहीं रखते थे।

है। तुमने हमारे याजक को भी ले लिया है। तुमने छोड़ा ही क्या है? तुम मुझे कैसे पूछ सकते हो, 'समस्या क्या है?'"

25दान के परिवार समूह के लोगों ने उत्तर दिया, "अच्छा होता, तुम हमसे बहस न करते। हममें से कुछ व्यक्ति गर्म स्वभाव के हैं। यदि तुम हम पर चिल्लाओगे तो वे गर्म स्वभाव वाले लोग तुम पर प्रहार कर सकते हैं। तुम और तुम्हारा परिवार मार डाला जा सकता है।"

26तब दान के लोग मुड़े और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। मीका जानता था कि वे लोग उसके लिये बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिए वह घर लौट गया।

27इस प्रकार दान के लोगों ने वे मूर्तियाँ ले लीं जो मीका ने बनाई थी। उन्होंने मीका के साथ रहने वाले याजक को भी ले लिया। तब वे लैश पहुँचे। उन्होंने लैश में शान्तिपूर्वक रहने वाले लोगों पर आक्रमण किया। लैश के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं थी। दान के लोगों ने उन्हें अपनी तलवारों के घाट उतारा। तब उन्होंने नगर को जला डाला। 28लैश में रहने वालों की रक्षा करने वाला कोई नहीं था। वे सीदोन के नगर से इतने अधिक दूर थे कि वे लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते थे और लैश के लोग अराम के लोगों से कोई व्यवहारिक सम्बन्ध नहीं रखते थे। लैश नगर बेत्रहोब प्रदेश के अधिकार में एक घाटी में था। दान के लोगों ने उस स्थान पर एक नया नगर बसाया और वह नगर उनका निवास स्थान बना। 29दान के लोगों ने लैश नगर का नया नाम रखा। उन्होंने उस नगर का नाम दान रखा। उन्होंने अपने पूर्वज दान के नाम पर नगर का नाम रखा। दान इस्राएल नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुराने समय में इस नगर का नाम लैश था।

30दान के परिवार समूह के लोगों ने दान नगर में मूर्तियों की स्थापना की। उन्होंने गेर्शोम के पुत्र योनातान को अपना याजक बनाया। गेर्शोम मूसा* का पुत्र था। योनातान और उसके पुत्र दान के परिवार समूह के तब तक याजक रहे, जब तक इस्राएल के लोगों को बन्दी बना कर बाबेल नहीं ले जाया गया। 31दान के लोगों ने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें मीका ने बनाया था। वे उस पूरे समय उन मूर्तियों को पूजते रहे जब तक शिलों में परमेश्वर का स्थान रहा।

लेवीवंशी और उसकी रखैल

19 उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। एक लेवीवंशी व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के बहुत दूर के क्षेत्र में रहता था। उस व्यक्ति ने एक स्त्री को अपनी दासी बना रखा था जो उसकी पत्नी की तरह थी। वह यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर की निवासी थी। 2किन्तु उस दासी का लेवीवंशी के साथ वाद–विवाद हो गया था। उसने उसे छोड़ दिया और यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर में अपने पिता के घर चली गई। वह वहाँ चार महीने रही। 3तब उसका पति उसके पास गया। वह उससे प्रेम से बात करना चाहता था, जिससे वह उसके पास लौट जाये। वह अपने साथ अपने नौकर और दो गधों को ले गया। लेवीवंशी व्यक्ति उस स्त्री के पिता के घर आया। उसके पिता ने लेवीवंशी व्यक्ति को देखा और उसका स्वागत करने के लिये प्रसन्नता से बाहर आया। 4युवती के पिता ने उसे ठहरने के लिये आमन्त्रित किया। इसलिये लेवीवंशी तीन दिन ठहरा। उसने खाया, पिया और वह अपने ससुर के घर सोया।

5चौथे दिन बहुत सवेरे वह उठा। लेवीवंशी चल पड़ने की तैयारी कर रहा था। किन्तु युवती के पिता ने अपने दामाद से कहा, "पहले कुछ खाओ। जब तुम भोजन कर लो तो तुम जा सकते हो।" 6इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति और उसका ससुर एक साथ खाने और मदिरा पीने के लिये बैठे। उसके बाद युवती के पिता ने उस लेवीवंशी से कहा, "कृपया आज भी ठहरे। आराम करो और आनन्द मनाओ। दोपहर के बाद तक जाने के लिये प्रतीक्षा करो।" इस प्रकार दोनों व्यक्तियों ने एक साथ खाया। 7जब लेवी पुरुष जाने को तैयार हुआ तो उसके ससुर ने उसे वहाँ रात भर रुकने का आग्रह किया।

8लेवी पुरुष पाँचवे दिन जाने के लिये सवेरे उठा। वह जाने को तैयार था कि उस जवान लड़की के पिता ने कहा, "पहले कुछ खा पी लो, फिर आराम करो और दोपहर तक रूक जाओ।" अत: दोनों ने फिर से एक साथ भोजन किया।

9तब लेवीवंशी व्यक्ति, उसकी रखैल और उसका नौकर चलने के लिये उठे। किन्तु युवती के पिता, उसके ससुर ने कहा, "लगभग अंधेरा हो गया है। दिन लगभग बीत चुका है। रात यहीं बिताओ और आनन्द मनाओ। कल बहुत सवेरे तुम उठ सकते हो और अपना रास्ता पकड़ सकते हो।" 10किन्तु लेवीवंशी व्यक्ति एक और रात वहाँ ठहरना नहीं चाहता था। उसने अपने काठीवाले दो गधों और अपनी रखैल को लिया। वह यबूस नगर तक गया। (यबूस यरूशलेम का ही दूसरा नाम है।) 11दिन लगभग छिप गया, वे यबूस नगर के पास थे। इसलिए नौकर ने अपने स्वामी लेवीवंशी से कहा, "हम लोग इस नगर में रूक जायें। यह यबूसी लोगों का नगर है। हम लोग यहीं रात बितायें।"

12किन्तु उसके स्वामी लेवीवंशी ने कहा, "नहीं हम लोग अपरिचित नगर में नहीं जाएंगे। वे लोग इस्राएल के लोगों में से नहीं हैं। हम लोग गिबा नगर तक जाएंगे।" 13लेवीवंशी ने कहा, "आगे बढ़ो। हम लोग गिबा या रामा

मूसा हिब्रू ग्रन्थ में यहाँ दो पाठ हैं–या तो "मूसा" या "मनश्शे"। मूसा स्वीकार करने योग्य पाठ ज्ञात होता है।

तक पहुँचने की कोशिश करें। हम उन नगरों में से
किसी एक में रात बिता सकते हैं।"
14इसलिए लेवीवंशी और उसके साथ के लोग आगे
बढ़े। जब वे गिबा नगर के पास आए तो सूरज डूब रहा
था। गिबा बिन्यामीन के परिवार समूह के प्रदेश में है।
15इसलिये वे गिबा में ठहरे। उन्होंने उस नगर में रात
बिताने की योजना बनाई। वे नगर में मुख्य सार्वजनिक
चौराहे में गए और वहाँ बैठ गए। किन्तु किसी ने उन्हें
रात बिताने के लिये अपने घर आमन्त्रित नहीं किया।
16उस सन्ध्या को एक बूढ़ा व्यक्ति अपने खेतों से नगर
में आया। उसका घर एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में था।
किन्तु अब वह गिबा नगर में रह रहा था। (गिबा के
लोग बिन्यामीन के परिवार समूह के थे।) 17बूढ़े व्यक्ति
ने यात्रियों (लेवीवंशी व्यक्ति) को सार्वजनिक चौराहे पर
देखा। बूढ़े व्यक्ति ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो? तुम
कहाँ से आये हो?"
18लेवीवंशी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यहूदा प्रदेश के
बेतलेहेम नगर से हम लोग यात्रा कर रहे हैं। हम अपने
घर जा रहे हैं। हम एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के दूर के
भाग के निवासी हैं। मैं यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम को गया
था। अब मैं अपने घर* जा रहा हूँ। 19हम लोगों के
पास अपने गधों के लिये पुआल और भोजन है। हम
लोगों के पास रोटी और दाखमधु है। हम लोगों में से
कोई–मैं, युवती या मेरा नौकर, कुछ भी नहीं चाहता।"
20बूढ़े ने कहा, "तुम्हारा स्वागत है। तुम मेरे यहाँ
ठहरो। तुम को आवश्यकता की सभी चीज़ें मैं दूँगा। तुम
सार्वजनिक चौराहे में रात व्यतीत मत करो"। 21तब वह
बूढ़ा व्यक्ति लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्तियों
को अपने साथ अपने घर ले गया। बूढ़े व्यक्ति ने उसके
गधों को खिलाया। उन्होंने अपने पैर धोए। तब उसने
उन्हें कुछ खाने और कुछ दाखमधु पीने को दिया।
22जब लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्ति
आनन्द ले रहे थे, तभी उस नगर के कुछ लोगों ने उस
घर को घेर लिया। वे बहुत बुरे व्यक्ति थे। वे जोर से
दरवाजा पीटने लगे। वे उस बूढ़े व्यक्ति से, जिसका वह
घर था, चिल्लाकर बोले, "उस व्यक्ति को अपने घर से
बाहर करो। हम उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध करना
चाहतेहैं।"
23बूढ़ा व्यक्ति बाहर गया और उन दुष्ट लोगों से
कहा, "भाइयों, नहीं, ऐसा बुरा काम न करो। वह व्यक्ति
मेरे घर में अतिथि है।* यह भयंकर पाप न करो।
24सुनो, यहाँ मेरी पुत्री है। उसने पहले कभी शारीरिक
सम्बन्ध नहीं किया है। मैं उसे और इस पुरुष की रखैल
को तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ। तुम उसका उपयोग जैसे
चाहो कर सकते हो। किन्तु इस व्यक्ति के विरुद्ध ऐसा
भंयकर पाप न करो।"
25किन्तु उन दुष्ट लोगों ने उस बूढ़े व्यक्ति की एक न
सुनी। इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति ने अपनी रखैल को उन
दुष्ट व्यक्तियों के साथ बाहर कर दिया। उन दुष्ट व्यक्तियों
ने पूरी रात उसके साथ कुकर्म किया और बुरी तरह
गालियाँ दीं। तब सवेरे उसे जाने दिया। 26सवेरे वह स्त्री
वहाँ लौटी जहाँ उसका स्वामी ठहरा था। वह सामने
दरवाजे पर गिर पड़ी। वह तब तक पड़ी रही जब तक
पूरा दिन नहीं निकल आया।
27सवेरे लेवीवंशी व्यक्ति उठा और उसने घर का
दरवाजा खोला। वह अपने रास्ते जाने के लिये बाहर
निकला। किन्तु वहाँ उसकी रखैल पड़ी थी।* वह घर
के रास्ते पर पड़ी थी। उसके हाथ दरवाजे की ड्योढी
पर थे। 28तब लेवीवंशी व्यक्ति ने उससे कहा, "उठो,
हम लोग चलें।" किन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। इसलिए
उसने उसे अपने गधे पर रखा और घर गया। 29जब
लेवीवंशी व्यक्ति अपने घर आया तब उसने एक छुरी
निकाली और अपनी रखैल को बारह टुकड़ों में काटा।
तब उसने स्त्री के उन बारह भागों को उन सभी क्षेत्रों में
भेजा जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे। 30जिसने यह देखा
उन सबने कहा, "ऐसा कभी नहीं हुआ था जब से
इस्राएल के लोग मिस्र से आए, तब से अब तक ऐसा
कभी नहीं हुआ। तय करो कि क्या करना है और हमें
बताओ?

इस्राएल और बिन्यामीन के बीच युद्ध :

20 इस प्रकार इस्राएल के सभी लोग एक हो गए।
वे मिस्पा नगर में यहोवा के सामने खड़े होने
के लिये एक साथ आए। वे पूरे इस्राएल देश से आए।
गिलाद प्रदेश के सभी इस्राएली लोग भी वहाँ थे। 2इस्राएल
के परिवार समूहों के सभी प्रमुख वहाँ थे। वे परमेश्वर
के सारे लोगों की सभा में अपने–अपने स्थानों पर बैठे।
उस स्थान पर तलवार के साथ चार लाख सैनिक थे।
3बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने सुना कि
इस्राएल के लोग मिस्पा नगर में पहुँचे हैं। इस्राएल के
लोगों ने कहा, "यह बताओ कि यह पाप कैसे हुआ।"
4अत: जिस स्त्री की हत्या हुई थी उसके पति ने
कहा, "मेरी रखैल और मैं बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा
नगर में पहुँचे। हम लोगों ने वहाँ रात बिताई। 5किन्तु
रात को गिबा नगर के प्रमुख उस घर पर आए जिसमें
मैं ठहरा था। उन्होंने घर को घेर लिया और वे मुझे

घर प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार। हिब्रू पाठ, "यहोवा का घर" है।

वह ... है इस समय यह रिवाज था कि यदि तुमने किसी को अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया है, तो तुम्हें उसकी रक्षा और देखभाल करनी पड़ती थी।

पड़ी थी वह मर गई थी।

मार डालना चाहते थे उन्होंने मेरी रखैल के साथ कुकर्म
किया और वह मर गई। 6इसलिए मैं अपनी रखैल को
ले गया और उसके टुकड़े कर डाले। तब मैंने हर एक
टुकड़ा इस्राएल के हर एक परिवार समूह को भेजा।
मैंने बारह टुकड़े उन प्रदेशों के भेजे जिन्हें हमने पाया।
मैंने यह इसलिए किया कि बिन्यामीन के परिवार समूह
के लोगों ने इस्राएल के देश में यह क्रूर और भयंकर
काम किया है। 7अब, इस्राएल के सभी लोगों, आप
बोलें। आप अपना निर्णय दें कि हमें क्या करना चाहिये?"

8तब सभी लोग उसी समय उठ खड़े हुए। उन्होंने
आपस में कहा, "हम लोगों में से कोई घर नहीं लौटेगा।
कोई नहीं, हम लोगों में से एक भी घर नहीं लौटेगा।
9हम लोग गिबा नगर के साथ यह करेंगे। हम गोट
डालेंगे। जिससे परमेश्वर बताएगा कि हम लोग उन
लोगों के साथ क्या करें। 10हम लोग इस्राएल के सभी
परिवारों के हर एक सौ में से दस व्यक्ति चुनेगें और हम
लोग हर एक हजार में से सौ व्यक्ति चुनेंगे। हम लोग हर
एक दस हजार में से हजार चुनेंगे। जिन लोगों को हम
चुन लेंगे वे सेना के लिये आवश्यक सामग्री पाएंगे। तब
सेना बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर को जाएगी। वह
सेना उन लोगों से बदला चुकाएगी जिन्होंने इस्राएल के
लोगों में यह भयंकर काम किया है।"

11इसलिये इस्राएल के सभी लोग गिबा नगर में एकत्रित
हुए। वे उसके एक मत थे, जो वे कर रहे थे। 12इस्राएल
के परिवार समूह ने एक सन्देश के साथ लोगों को
बिन्यामीन के परिवार समूह के पास भेजा। सन्देश यह
था: "इस पाप के बारे में क्या कहना है जो तुम्हारे कुछ
लोगों ने किया है? 13उन गिबा के पापी मनुष्यों को
हमारे पास भेजो। उन लोगों को हमें दो जिससे हम उन्हें
जान से मार सकें। हम इस्राएल के लोगो में पाप को
अवश्य दूर करेंगे।" किन्तु बिन्यामीन के परिवार समूह
के लोगों ने अपने सम्बन्धी इस्राएल के लोगों के दूतों की
एक न सुनी। 14बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने
अपने नगरों को छोड़ा और वे गिबा नगर में पहुँचे। वे
गिबा में इस्राएल के अन्य परिवार समूह के विरुद्ध लड़ने
गए।

15बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों ने छब्बीस हजार
सैनिकों को इकट्ठा किया। वे सभी सैनिक युद्ध के
लिये प्रशिक्षित थे। उनके साथ गिबा नगर के सात सौ
प्रशिक्षित सैनिक भी थे। 16उनके सात सौ ऐसे प्रशिक्षित
व्यक्ति भी थे जो बाँया हाथ चलाने में दक्ष थे। उनमें से
हर एक गुलेल का उपयोग दक्षता से कर सकता था। वे
सब एक बाल पर भी पत्थर मार सकते थे और निशाना
नहीं चूकता था। 17इस्राएल के सारे परिवारों ने, बिन्यामीन
को छोड़कर चार लाख योद्धाओं को इकट्ठा किया।
उन चार लाख योद्धाओं के पास तलवारें थीं। उनमें हर
एक प्रशिक्षित सैनिक था। 18इस्राएल के लोग बेतेल
नगर तक गए। बेतेल में उन्होंने परमेश्वर से पूछा,
"कौन सा परिवार समूह बिन्यामीन के परिवार समूह
पर प्रथम आक्रमण करेगा?" यहोवा ने उत्तर दिया,
"यहूदा का परिवार समूह प्रथम जाएगा।"

19अगली सुबह इस्राएल के लोग उठे। उन्होंने गिबा के
निकट डेरा डाला 20तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की
सेना से युद्ध के लिये निकल पड़ी। इस्राएल की सेना ने
गिबा नगर में बिन्यामीन की सेना के विरुद्ध अपना
मोर्चा लगाया। 21तब बिन्यामीन की सेना गिबा नगर के
बाहर निकली। उन्होंने उस दिन की लड़ाई में इस्राएल
की सेना के बाईस हजार लोगों को मार डाला।

22-23इस्राएल के लोग यहोवा के सामने गए। वे शाम
तक रोकर चिल्लाते रहे। उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या
हमें बिन्यामीन के विरुद्ध लड़ने जाना चाहिए? वे लोग
हमारे सम्बन्धी हैं। यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ और
उनके विरुद्ध लड़ो। इस्राएल के लोगों ने एक दूसरे का
साहस बढ़ाया। इसलिए वे पहले दिन की तरह फिर
लड़ने गए।"

24तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना के पास
आई। यह युद्ध का दूसरा दिन था। 25बिन्यामीन की सेना
दूसरे दिन इस्राएल की सेना पर आक्रमण करने के
लिये गिबा नगर से बाहर आई। इस समय बिन्यामीन की
सेना ने इस्राएल की सेना के अन्य अट्ठारह हजार
सैनिकों को मार डाला। इस्राएल की सेना के वे सभी
प्रशिक्षित सैनिक थे।

26तब इस्राएल के सभी लोग बेतेल नगर तक गए।
उस स्थान पर वे बैठे और यहोवा को रोकर पुकारा।
उन्होंने पूरे दिन शाम तक कुछ नहीं खाया। वे होमबलि
और मेल बलि भी यहोवा के लिए लाए। 27इस्राएल के
लोगों ने यहोवा से एक प्रश्न पूछा। (इन दिनों परमेश्वर
का साक्षीपत्र का सन्दूक बेतेल में था। 28पीनहास नामक
एक याजक साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा करता
था। पीनहास एलीआज़ार नामक व्यक्ति का पुत्र था।
एलीआजार हारून का पुत्र था।) इस्राएल के लोगों ने
पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के लोगों के विरुद्ध फिर
लड़ने जाना चाहिए। वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं या हम
युद्ध करना बन्द कर दें?" यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ।
कल मैं उन्हें हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।" 29तब
इस्राएल की सेना ने गिबा नगर के चारों ओर अपने
व्यक्तियों को छिपा दिया। 30इस्राएल की सेना तीसरे दिन
गिबा नगर के विरुद्ध लड़ने गई। उन्होंने जैसा पहले
किया था वैसा ही लड़ने के लिये मोर्चा लगाया। 31बिन्यामीन
की सेना इस्राएल की सेना से युद्ध करने के लिये गिबा
नगर के बाहर निकल आई। इस्राएल की सेना पीछे हटी
और उसने बिन्यामीन की सेना को पीछा करने दिया।
इस प्रकार बिन्यामीन की सेना को नगर को बहुत पीछे
छोड़ देने के लिये धोखा दिया गया। बिन्यामीन की सेना

ने इस्राएल की सेना के कुछ लोगों को वैसे ही मारना आरम्भ किया जैसे उन्होंने पहले मारा था। इस्राएल के लगभग तीस व्यक्ति मारे गए। उनमें से कुछ लोग मैदानों में मारे गए थे। उनमें से कुछ व्यक्ति सड़कों पर मारे गए थे। एक सड़क बेतेल को जा रही थी। दूसरी सड़क गिबा को जा रही थी। 32बिन्यामीन के लोगों ने कहा, "हम पहले की तरह जीत रहे हैं।" उसी समय इस्राएल के लोग पीछे भाग रहे थे लेकिन यह एक चाल थी। वे बिन्यामीन के लोगों को उनके नगर से दूर सड़कों पर लाना चाहते थे। 33इस्राएल की सेना के सभी लोग अपने स्थानों से हटे। वे बालतामार स्थान पर रूके। तब जो लोग गिबा नगर की ओर छिपे थे, वे अपने छिपने के स्थानों से गिबा के पश्चिम को दौड़ पड़े। 34इस्राएल की सेना के पूरे प्रशिक्षित दस हजार सैनिकों ने गिबा नगर पर आक्रमण किया। युद्ध बड़ा भीषण था। किन्तु बिन्यामीन की सेना नहीं जानती थी कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना होने जा रही है? 35यहोवा ने इस्राएल की सेना का उपयोग किया और बिन्यामीन की सेना को पराजित किया। उस दिन इस्राएल की सेना ने बिन्यामीन के पच्चीस हजार एक सौ सैनिकों को मार डाला। वे सभी सैनिक युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे।

36इस प्रकार बिन्यामीन के लोगों ने देखा कि वे पराजित हो गए। इस्राएल की सेना पीछे हटी। वे पीछे हटे क्योंकि वे उस अचानक आक्रमण पर भरोसा कर रहे थे जिसके लिये वे गिबा के निकट व्यवस्था कर चुके थे।

37जो व्यक्ति गिबा के चारों ओर छिपे थे वे गिबा नगर में टूट पड़े। वे फैल गए और उन्होंने अपनी तलवारों से नगर के हर एक को मार डाला। 38इस्राएली सेना के दल और छिपकर घात लगाने वाले दल के बीच यह संकेत चिन्ह निश्चित किया गया था कि छिपकर घात लगाने वाला दल नगर से धुएँ का विशाल बादल उड़ाएगा।

39-41इसलिये युद्ध के समय इस्राएल की सेना पीछे मुड़ी और बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के सैनिकों को मारना आरम्भ किया। उन्होंने लगभग तीस सैनिक मारे। वे कह रहे थे, "हम वैसे जीत रहे हैं जैसे पहले युद्ध में जीत रहे थे।" किन्तु तभी धुएँ का विशाल बादल नगर से उठना आरम्भ हुआ। बिन्यामीन के सैनिक मुड़े और धुँए को देखा। पूरा नगर आग की लपटों में था। तब इस्राएल की सेना मुड़ी और लड़ने लगी। बिन्यामीन के लोग डर गए थे। अब वे समझ गए थे कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना हो चुकी थी।

42इसलिये बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना के सामने से भाग खड़ी हुई। वे रेगिस्तान की ओर भागे। लेकिन वे युद्ध से बच न सके। इस्राएल के लोग नगर से बाहर आए और उन्हें मार डाला। 43इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों को हराया। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों का पीछा किया। उन्हें आराम नहीं करने दिया। उन्होंने उन्हें गिबा के पूर्व के क्षेत्र में हराया। 44इस प्रकार अट्ठारह हजार वीर और शक्तिशाली बिन्यामीन की सेना के सैनिक मारे गए।

45बिन्यामीन की सेना मुड़ी और मरुभूमि की ओर भागी। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर भाग कर गए। किन्तु इस्राएल की सेना ने सड़क के सहारे बिन्यामीन की सेना के पाँच हजार सैनिकों को मार डाला। वे बिन्यामीन के लोगों का पीछा करते रहे। उन्होंने उनका पीछा गिदोम नामक स्थान तक किया। इस्राएल की सेना ने उस स्थान पर बिन्यामीन की सेना के दो हजार और सैनिकों को मार डाला।

46उस दिन बिन्यामीन की सेना के पच्चीस हजार सैनिक मारे गए। उन सभी व्यक्तियों के पास तलवारें थीं। बिन्यामीन के वे लोग वीर योद्धा थे। 47किन्तु बिन्यामीन के छः सौ व्यक्ति मुड़े और मरुभूमि में भाग गए। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर गए। वे वहाँ चार महीने तक ठहरे रहे। 48इस्राएल के लोग बिन्यामीन के प्रदेश में लौटकर गए। जिन नगरों में वे पहुँचे, उन नगरों के आदमियों को उन्होंने मार डाला। उन्होंने सभी जानवरों को भी मार डाला। वे जो कुछ पा सकते थे, उसे नष्ट कर दिया। वे जिस नगर में गए, उसे जला डाला।

बिन्यामीन के लोगों के लिये पत्नियाँ प्राप्त करना

21 मिस्पा में इस्राएल के लोगों ने प्रतिज्ञा की। उनकी प्रतिज्ञा यह थी, "हम लोगों में से कोई अपनी पुत्री को बिन्यामीन के परिवार समूह के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देगा।"

2इस्राएल के लोग बेतेल नगर को गए। इस नगर में वे परमेश्वर के सामने शाम तक बैठे रहे। वे बैठे हुए रोते रहे। 3उन्होंने परमेश्वर से कहा, "यहोवा, तू इस्राएल के लोगों का परमेश्वर है। ऐसी भयंकर बात हम लोगों के साथ कैसे हो गई है? इस्राएल के परिवार समूहों में से एक परिवार समूह क्यों कम हो जाय!"

4अगले दिन सवेरे इस्राएल के लोगों ने एक वेदी बनाई। उन्होंने उस वेदी पर परमेश्वर को होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। 5तब इस्राएल के लोगों ने कहा, "क्या इस्राएल का कोई ऐसा परिवार समूह है जो यहोवा के सामने हम लोगों के साथ मिलने नहीं आया है?" उन्होंने यह प्रश्न इसलिये पूछा कि उन्होंने एक गंभीर प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई मिस्पा में अन्य परिवार समूहों के साथ नहीं आएगा, मार डाला जाएगा।

6इस्राएल के लोग अपने रिश्तेदारों, बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों के लिये, बहुत दुःखी थे। उन्होंने

कहा, "आज इस्राएल के लोगों से एक परिवार समूह कट गया है। 7 हम लोगों ने यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी कि हम अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन परिवार के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देंगे। हम लोगों को कैसे विश्वास होगा कि बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों को पत्नियाँ प्राप्त होंगी?"

8तब इस्राएल के लोगों ने पूछा, "इस्राएल के परिवार समूहों में से कौन मिस्पा में यहाँ नहीं आया है? हम लोग यहोवा के सामने एक साथ आए हैं। किन्तु एक परिवार समूह यहाँ नहीं है।" तब उन्हें पता लगा कि इस्राएल के अन्य लोगों के साथ यावेश गिलाद नगर का कोई व्यक्ति वहाँ नहीं था। 9इस्राएल के लोगों ने यह जानने के लिये कि वहाँ कौन था और कौन नहीं था, हर एक को गिना। उन्होंने पाया कि यावेश गिलाद का कोई भी वहाँ नहीं था। 10इसलिए इस्राएल के लोगों की परिषद ने बारह हजार सैनिकों को यावेश गिलाद नगर को भेजा। उन्होंने उन सैनिकों से कहा, "जाओ और यावेश गिलाद लोगों को अपनी तलवार के घाट उतार दो। 11तुम्हें यह अवश्य करना होगा। यावेश गिलाद में हर एक पुरुष को मार डालो। उस स्त्री को भी मार डालो जो एक पुरुष के साथ रह चुकी हो। किन्तु उस स्त्री को न मारो जिसने किसी पुरुष के साथ कभी शारीरिक सम्बन्ध न किया हो।" सैनिकों ने यही किया। 12उन बारह हजार सैनिकों ने यावेश गिलाद में चार सौ ऐसी स्त्रियों को पाया, जिन्होंने किसी पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया था। सैनिक उन स्त्रियों को शीलो नगर के डेरे पर ले आए। शीलो कनान प्रदेश में है।

13तब इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों के पास एक सन्देश भेजा। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों के साथ शान्ति–सन्धि करने का प्रस्ताव रखा। बिन्यामीन के लोग रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर थे। 14इसलिये बिन्यामीन के लोग उस समय इस्राएल के लोगों के पूरे परिवार के पास लौटे। इस्राएल के लोगों ने उन्हें उन यावेश गिलाद की स्त्रियों को दिया, जिन्हें उन्होंने मारा नहीं था। किन्तु बिन्यामीन के सभी लोगों के लिये पर्याप्त स्त्रियाँ नहीं थीं।

15इस्राएल के लोग बिन्यामीन के लोगों के लिये दु:खी हुए। उन्होंने उनके लिये इसलिए दु:ख अनुभव किया क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के परिवार समूहों को अलग कर दिया था। 16इस्राएल के लोगों के अग्रजों ने कहा, "बिन्यामीन परिवार समूह की स्त्रियाँ मार डाली गई हैं। हम लोग बिन्यामीन के जो लोग जीवित हैं उनके लिये पत्नियाँ कहाँ पाएंगे। 17बिन्यामीन के जो लोग अभी जीवित हैं, अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिये उन्हें बच्चें चाहियें। यह इसलिये करना होगा कि इस्राएल का एक परिवार समूह नष्ट न हो। 18किन्तु हम लोग अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन लोगों के साथ विवाह करने की स्वीकृति नहीं दे सकते। हम यह प्रतिज्ञा कर चुके हैं: 'कोई व्यक्ति जो बिन्यामीन के व्यक्ति को पत्नी देगा, अभिशप्त होगा।' 19हम लोगों के सामने एक उपाय है। यह शीलो नगर में यहोवा के लिये उत्सव का समय है। यह उत्सव यहाँ हर वर्ष मनाया जाता है। (शीलो नगर बेतेल नगर के उत्तर में है और उस सड़क के पूर्व में है जो बेतेल से शकेन को जाती है। और यह लबोना नगर के दक्षिण में भी है।)

20इसलिये अग्रजों ने बिन्यामीन लोगों को अपना विचार बताया। उन्होंने कहा, "जाओ, और अंगूर के बेलो के खेतों में छिप जाओ। 21उत्सव में उस समय की प्रतिक्षा करो जब शीलो की युवतियाँ नृत्य में भाग लेने आएं। तब अंगूर के खेतों में अपने छुपने के स्थान से बाहर निकल दौड़ो। तुममें से हर एक उस युवतियों को शीलो नगर से बिन्यामीन के प्रदेश में ले जाओ और उसके साथ विवाह करो। 22उन युवतियों के पिता और भाई हम लोगों के पास आएंगे और शिकायत करेंगे। किन्तु हम लोग उन्हें इस प्रकार उत्तर देंगे:

'बिन्यामीन के लोगों पर कृपा करो। वे अपने लिए पत्नियाँ इसलिए नहीं पा रहे हैं कि वे लोग तुमसे लड़े और वे इस प्रकार से स्त्रियों को ले गए हैं, अत: तुमने अपनी परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी। तुमने प्रतिज्ञा की थी कि तुम उन्हें स्त्रियाँ नहीं दोगे, तुमने बिन्यामिन के लोगों को स्त्रियों नहीं दी परन्तु उन्होंने तुमसे स्त्रियाँ ले ली। इसलिये तुमने प्रतिज्ञा भंग नहीं की।'"

23इसलिये बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने वही किया। जब युवतियाँ नाच रही थीं, तो हर एक व्यक्ति ने उनमें से एक–एक को पकड़ लिया। वे उन स्त्रियों को दूर ले गए और उनके साथ विवाह किया। वे उस प्रदेश में लौटे, जो उन्हें उत्तराधिकार में मिला था। बिन्यामीन के लोगों ने उस प्रदेश में फिर नगर बसाये और उन नगरों में रहने लगे।

24तब इस्राएल के लोग अपने घर लौटे। वे अपने प्रदेश और परिवार समूह को गए। 25उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। हर एक व्यक्ति वही करता था, जिसे वह ठीक समझता था।